भारतीय क्रिस्त कलीसिया द्वारा मुद्रित और प्रकाशित (जून ०६)

छोटे भविष्यद्वक्ता

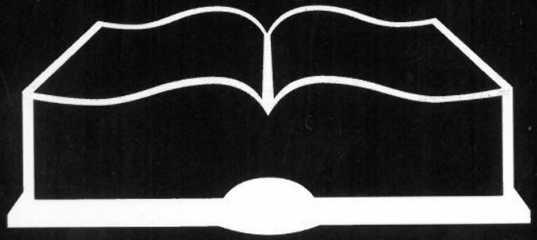

शान्त (प्रार्थना) समय पुस्तिका

छोटे भविष्यद्वक्ता

शान्त समय (प्रार्थना) पुस्तिका

छोटे भविष्यद्वक्ता : ऐतिहासिक पार्श्वभूमि

इसमें कोई दोराय नहीं कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के महात्वाकांक्षी पुरुष थे।

पुराने नियम का अधिकतर भाग इन्ही व्यक्तियों के लेखों से भरा है, जिन्हें हम भविष्यद्वक्ता कहते हैं और जिन्होंने अधिक लिखा है उन्हें हम बड़े भविष्यद्वक्ता और जिन्होंने कम लिखा उन्हें हम छोटे भविष्यद्वक्ता कहते हैं।

इब्री भाषा के अनुसार ''भविष्यद्वक्ता'' का विश्लेषण:

- रोहे - का ११ बार उपयोग हुआ है, अर्थात 'देखना' जिसे देखने वाला भी कहते हैं।
- कोजेह-का २२ बार उपयोग हुआ है अर्थात् 'परमेश्वर से दर्शन पाया हुआ व्यक्ति।'
- नबी- ३०० से अधिक बार उपयोग हुआ है जिसका अर्थ है 'घोषणा' या वह जो परमेश्वर की ओर से बोलता है।

भविष्यद्वक्ता वह व्यक्ति था जिसने लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाया (और/या लिखा) उन्हें परमेश्वर के व्यक्ति बुलाया गया। इन लोगों ने अधिकतर उनके अपने लोगों की जरूरतों के बारे में बात किया और पाप को त्यागने के प्रति कठोर रहे।

कभी-कभी उनके सन्देशों मे भविष्यवाणी के तत्त्व होते जैसे मसीह का आना। कभी-कभी प्रतीकीय भाषा द्वारा वे अपने सन्देश पहुंचाते थे।

जब तक कि छोटे भविष्यद्वक्ता लिखते तब तक इस्राएली इतिहास कई अच्छे और कई बुरे समयों से गुजर चुका था।

वाचा कि भूमि पर पहुंचने के बाद इस भूमि को इस्राएलियों ने अनेक गोत्रों में बाँट दिया। फिर करीब ४०० वर्षों तक न्यायियों ने उनपर राज्य किया। इस समय के बाद शाऊल, दाऊद और सुलैमान इन राजाओंने १२० वर्षों तक राज्य किया (हर एक ने ४० वर्ष)।

सुलैमान राजा के मरने के तुरन्त बाद राज्य का बँटवारा दो विरोधि राज्यों में

हो गया। इसी कालावधी में छोटे भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा याने ९०० ई. पू. से ४०० ई. पू. तक ।

इस कालावधी में इस्त्राएल (उत्तरी) और यहूदा के (दक्षीणी) भाग राजनैतिक अस्थिरता और राष्ट्रीय अपमान से गुजरे । हर छोटे भविष्यद्वक्ता ने उस समय की घटनाओं और राष्ट्र के विभीन्न मुद्दों पर लिखा ।

******

उस समय के दूसरे ऐतिहासिक राष्ट्र

१. मिस्त्र : यहूदि राष्ट्र इस्त्राएल (१५०० ई. पू.) जब स्थापित हो रहा था उस समय मिस्त्र एक जागतिक शक्ति था। वो अनेक वर्षों तक शक्तिशाली बने रहे।

२. असीरिया : यहूदी राष्ट्र के बँटवारे के समय असीरिया एक जागतिक शक्ति था। ये वही राष्ट्र था जिसने इस्त्राएल (उत्तरी राज्य) को करीब ७२२ ई. पू. में अपने दासत्व में ले लिया। छोटे भविष्यद्वक्ताओं में से कई जैसे ओबाद्याह, योएल, योना, होशे, आमोस, मीका, नहूम और सपन्याह ने इस अन्तराल में अपना प्रचार और लेखन किया (जबकि योएल और ओबाद्याह का सही समय बतना कठीन है)।

३. बेबीलोनः बेबीलोन राष्ट्र, असीरिया को जीत कर दुनिया का दूसरा प्रबल राष्ट्र बना। हबक्कुक इस कालावधी में लिखा गया । बेबीलोनियों ने यहूदा (दक्षीण राज्य) को जीत कर करीब ५८६ ई. पू. में मन्दीर का नाश किया।

४.परशियाः पुराने नियम के समय अन्तीम राष्ट्र जो प्रबल रहा वह था परशिया। यही समय था जब हग्गै, जकर्याह और मलाकी ने भविष्यवाणी की । इसी समय में यहूदी कैदियों को अपने भूमी पर लौटना और मन्दिर का पुनर्निर्माण कर मनुष्यों के बीच परमेश्वर का दूसरा कार्य अर्थात् ४०० वर्षों बाद मसीह के आगमन के लिये अपने आपको तैयार करना था।

परमेश्वर ने इन छोटे भविष्यद्वक्ताओं का उपयोग किया ताकि वे इतिहास के अन्तीम समय में राष्ट्र को तैयार कर सकें जिसके द्वारा हम भी आशीष पा रहे हैं।

छोटे भविष्यद्वक्ताओं का करीबी समय

असीरियाई काल

ओबाद्याह –	८४० ई. पू.
योएल–	८३० ई. पू.
योना–	७८० ई. पू.
होशे–	७६५ ई. पू.
आमोस–	७६० ई. पू.
मीका–	७४० ई. पू.

बेबीलोनीय काल

सपन्याह–	६४० ई. पू.
नहूम–	६४० ई. पू.
हबक्कूक–	६०८ ई. पू.

परशियाई काल

हग्गै –	५२० ई. पू.
जकर्याह–	५२० ई. पू.
मलाकी–	४२० ई. पू.

छोटे भविष्यद्वक्ताओं की संक्षिप्त जानकारी

तारीख ई.पू	भविष्यद्वक्ता	नाम का अर्थ	विषय	के बारे में भविष्यवाणी की	पापों को दर्शाया
८४० से ८३०	ओबाद्याह	यहोवा का भक्त	प्रभु का दिन, एदोम का विनाश, ईस्त्राएल का पुनर्वसन	एदोम के विरूद्ध	एदोम द्वारा याकूब के प्रति लगातार हिंसा। जब यहूदा को बंदी बनाया गया तब एदोम खुष हुआ।
८३० से ८५०	योएल	यहोवा परमेश्वर है।	प्रभु का दिन	इस्त्राएल, उत्तरी राज्य	व्यभिचार, पियक्कड़पन, मूर्तिपूजा, दुराचार
७८० से ७४०	योना	कबूतर	वचनबद्धता का चिन्ह, यीशु मसीह का वर्ग, पश्चाताप करने वालों पर परमेश्वर की दया	निनवे और सभी लोगों का फँसाव	असीरियों की क्रूरता
७६५ से ७२५	होशे	उद्धार	उद्धार	इस्त्राएल, उत्तरी राज्य	व्यभिचार, पियक्कड़पन, मूर्तिपूजा, दुराचार
७६०	आमोस	दुःख उठानेवाला	प्रभु का दिन, अनन्त की दहाड़	इस्त्राएल, यहूदा और बिन्यामिन, सभी राष्ट्र	गरीबों का शोषण, व्यभिचार, विलासिता, लोगों और न्याय का भ्रष्टाचार
७४० से ७००	मीका	कौन यहोवा के समान है	अनन्त एक न्यायी न्यायाधीश है	समेरिया, यरूशलेम और सारी पृथ्वी	उस स्थान में न्याय की कमी, अन्याय, शोषण

तारीख ई.पू	भविष्यव्दक्ता	नाम का अर्थ	विषय	के बारे में भविष्यवाणी की	पापों को दर्शाया
६४० से ६२०	नहूम	सांत्वना	नीनवे का न्याय, इस्राएल को शान्ति	असीरियाई, प्राथमिक रूप से नीनवे शहर	असीरियो की क्रूरता, सिमाओं का उलंघन
६४० से ६०९	सपन्याह	यहोवा द्वारा छिपाया हुआ	पृथ्वि पर यहोवा का रोष, कौन छिप सकता हैं? इस्राएल पश्चाताप करता है, परमेश्वर उन्हें बचाता है	यहूदा, यरुशलेम, सारा ईस्राएल और सारे लोग, प्रभु के दिन के बारे में उन्हें चेतावनी	धार्मिक व्यभिचार
६०८ से ६०५	हबक्कूक	आलिंगन	चालदियों के विनाश द्वारा यहूदा को आलिंगन	बेबीलोन सहीत सारे लोगों का फँसाव	चढ़ाई, लूट, लालच, खुद की बढ़ाई, ईमारत में धिरोपण/ हिंसा, अमानवता, मूर्तिपूजा
५२०	हग्गै	उत्सव	मन्दिर का पुनर्वसन, कलीसिया की ओर ईशारा करता है।	यरुबाबेल, यहोशू और बचे हुओं की वापसी	परमेश्वर का घर बनाने में उपेक्षा, टालने की आदत।
५२० से ४८०	जकर्याह	यहोवा द्वारा याद किया गया	परमेश्वर के राज्य के आने से पहले मन्दिर का निर्माण	यरुबाबेल, यहोशू और बचे हुओं की वापसी	यहोशू के वस्त्र गंदे थे। न्याय, दया, और शान्ति की कमी। बुराई में जीना।
४२० से ४००	मलाकी	मेरा सन्देश वाहक	आनेवाले सन्देश वाहक के लिये तैयार रहो (एलियाह)	इस्राएल (१२ गोत्र) और परमेश्वर का आज का इस्राएल (कलीसिया)	याजक कर्तव्य हीन थे। तलाक, व्यभिचार, और परमेश्वरसे चोरी और समालोचना के लिये लोगों कों डाँट

होशे की किताब (होशे १-३) दिन -१

परिचय

- होशे को उत्तरी राष्ट्र (इस्राएल) में भविष्यवाणी करने का बुलावा ।
- होशे का कार्य करीब-करीब ४० वर्षों (७६० से ७२० ई. पू.) तक चला।
- इस्राएल के सभी राजा दुष्ट थे, क्योंकि वे लगातार मूर्तिपूजा में लगे थे।
- परन्तु पापों के इस अविश्वसनिय समय के बीच, होशे इस्राएल के लिये परमेश्वर के प्रेम की बात बताता है। होशे में परमेश्वर की गहराई स्पष्ट दिखाई पड़ती है।
- अध्याय १-३ में होशे का गोमेर से प्रेम और परमेश्वर का इस्राएल से प्रेम की तुलना के द्वारा इस पुस्तक का मंच तैयार किया गया है। अध्याय ४-१४ में इस प्रकार के प्रेम को अस्वीकार करने के संकटपूर्ण प्रतिफलों का उल्लेख किया गया है।

इस्राएल से परमेश्वर का विवाह (होशे १:१-३:५)

होशे और गोमेर का दृष्य है। होशे से परमेश्वर ने चुनौतीपूर्ण विश्वास की मांग की। (१:२-३) । व्यभीचारी पत्नी शायद विवाह से पहले भी अनैतिक रही हो। परमेश्वर दिखाना चाहते थे कि इस्राएल ने उन्हें कितनी गहरी चोट पहुँचाई है। इस्राएल का परमेश्वर से विवाह हुआ था। फिर भी अपने रिश्ते में वह अत्यंत अविश्वासी थी। धार्मिक व्यभिचार जिसकी वह दोषी थी वह मूर्तिपूजा का एक प्रकार था, लेकिन इसका उलेख भीन्न-भीन्न रीती से किया गया है।

- मूर्ती गढ कर उसके आगे दण्डवत करना मूर्तीपूजा का मौलिक रूप था।
- मूर्ती पूजा के कई प्रकार थे जिनमें जनन देवी की उपसना भी थी, जिसमें लैंगिक व्यभिचार का समावेश भी था।
- मूर्ती पूजा का दूसरा स्वरूप था सांसारिक वस्तुएँ ।
- मूर्ती पूजा का और एक स्वरूप परमेश्वर पर भरोसा रखने के बजाए अपनी शक्ति या दूसरे राष्ट्रों की शक्ति पर भरोसा रखना था।

जब गोमेर ने होशे को त्याग दिया (अ.३), परमेश्वर चाहते थे कि वो उसे फिर से खरीद ले। इस्राएल के उग्र अविश्वास के बावजूद भी परमेश्वर दिखाना चाहते हैं कि वे उसके लिये कितने बेचैन हैं, उसे फिर से अपनाने के लिये। परमेश्वर की क्षमा अद्‌भुत है।

हमारे जीवन में मूर्तीपूजा के कौनसे स्वरूप दिखाई देते हैं ? क्या हम परमेश्वर पर भरोसा रखने के बजाय अपने स्वयं की शक्ति या अपने अगुवे की शक्ति पर भरोसा करते हैं ? हमारे दिलों में पैसे का स्थान कहाँ है ? परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता परमेश्वर के लिये आनंददायी है या चोट पहुँचाने वाला ? परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं और हमसे एक गहरा रिश्ता बनाने के लिये बेताब रहते हैं।

उपयोगः हाल ही में आपके जीवन में घटी कुछ दुःखद घटनाओं को और उनसे आप कैसे उबरे यह लिखो।

"न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊंचाई, न गहराई और न समस्त सृष्टि की कोई वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी" (रोमियों : ८:३८-३९)

******

होशे की किताब (होशे ४-५) दिन - २

परमेश्वर इस्राएल के विरूद्ध (होशे ४:१-१९)

अनेक भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा चेतावनी देने के बाद, परमेश्वर इस नतीजे पर पहुंचे कि अब अनुशासन की आवश्यकता है। अब इस्राएल के प्रति वे अपना दोष लगाते हैं। परमेश्वर ने दोष लगाया किः

- अविश्वास और घृणा (व.१)
- श्राप, झूठ, हत्या, चोरी और व्यभिचार (व.२)
- परमेश्वर के बारे में ज्ञान की कमी (व. ६)
- याजक (अगुवे) ने परमेश्वर के ज्ञान को तुच्छ जाना (व.६)
- मूर्ती पूजा (व.१२)

हमेशा परमेश्वर पहले अपनी दया के द्वारा हमसे पुनर्विचार कि प्रार्थना करते

हैं। इस आशा से कि हम पश्चाताप करेंगे। (रोमियों २:४) । लेकिन यदि हम इन्कार करें तो दूसरा कदम है अनुशासन।

लेकिन जब फलस्वरूप अनुशासन के बाद भी इस्राएलियों ने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा कही परमेश्वर की बात को न माना तब परमेश्वर ने इस्राएल का न्याय करना आरंभ किया। अनुशासन के बाद न्याय आता है।

जब सबकुछ सही चल रहा हो तब क्या हम परमेश्वर की सुनने को तुरन्त तैयार होते हैं ? बदलने के लिये क्या हमें घोर विपत्ती की अवश्यकता पड़ती हैं ? कौनसी शीक्षाएँ हमने हमारे जीवन में कठोर रूप से लिये हैं।

इस्राएल के विरूद्ध न्याय (होशे ५:१-१५)

- इस्राएल न लौट पाने की दिशा में बढ़ रहा था (व.४.)
- उनका घमण्ड अप्रतीम था (व.५)
- सो परमेश्वर उनसे अलग होने पर थे (व.६)
- परमेश्वर रुके थे कि वे पश्चाताप करें और अपने अपराध को स्वीकार करें (व.१५)

हमरा पश्चाताप है कि हम परमेश्वर की ओर मुड़ें । हमरे पापों को मनाते हुए दृढ़ता से परमेश्वर को खोजें।

क्या हम वहाँ पहुँच चुके हैं जहाँ से लौट पाना मुश्किल है ? क्या हमने परमेश्वर के अनुशासन को तुच्छ माना है? एक उत्तम काम हम कर सकते हैं वो है; परमेश्वर की ओर लौटना, क्योंकि वह हमें चंगा कर सकता है और पुनःस्थापित कर सकता है। उसका अनुग्रह और दया महान है वह इस्राएल को भी क्षमा कर सकता है।

उपयोगः पश्चातप के लिये आप को क्या प्रोत्साहित करता है?

"क्या तू उसकी कृपा, सहनशीलता और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है ? क्या तू यह नही समझता कि परमेश्वर की कृपा तुझे पाप से मन फिराव सिखाती है? पर तू अपनी कठोरता और हटीले मन के कारण परमेश्वर के क्रोध के दिन के लिये, जब परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट होगा, अपने निमित्त क्रोध इकट्ठा कर रहा है। (रोमियों २:४-५)"

होशे की किताब (होशे ६-७) दिन ३

इस्त्राएल का पश्चाताप न करना (होशे ६:१-७:१६)

प्रभु इस्त्राएलियों से विनती करते कि वे प्रभु की ओर लौटें। परमेश्वर चाहता है वे परमेश्वर की क्षमा के स्वभाव और अनुग्रह पर विश्वास करें। देखिये उन शब्दों को जिनका उपयोग परमेश्वर के क्षमा के स्वभाव का उल्लेख करने में किया गया है।

- वह हमें चंगा करेगा (व.१)
- वह हमारे घावों पर पट्टी बान्धेंगा (व.१)
- वह हमें जिलाएगा (व.२)
- वह हमें फिर वापस खड़ा करेगा (व.२)
- वह हमें उसके सम्मुख जीवित रखेगा (व.२)

परन्तु इस्त्राएल टस से मस न हुआ। परमेश्वर कहते हैं *''मैं दया चाहता हूँ, बलिदान नही।''* यह वचन यीशुने फरीसियों से कहा था। परमेश्वर के लिये उनका धर्म प्रभावशाली नहीं था। परमेश्वर चाहते हैं कि हम धार्मिक वचनबद्धता के बजाए प्रेम करने वाले बनें।

इस्त्राएल का मन न फिराना उनके विरूद्ध न्याय को ला खड़ा करता है (व.११)। परमेश्वर उनके बुरे कामों को याद रखता है(७:२)। कभी कभार हम सोचते हैं कि परमेश्वर उदार है और सोचते हैं कि वह भूल जाता है। वचन बताता है कि पाप को परमेश्वर बिना परिणाम या बिना सज़ा के जाने नहीं देते।

पाप के बारे में दुःख की बात ये है कि वो कारण बनता है हमारे इस सोच का कि; पाप छुपाया जा सकता है। पर नहीं। सारी सृष्टी में कुछ भी परमेश्वर की नजर से छुपा नहीं है। जिस से हमें काम है उसकी आँखो के सामने वस्तुएँ खुली और बेपर्दा हैं। पाप के प्रति न्याय से सिर्फ एक ही चीज हमें बचा सकती है वो है पश्चाताप और मसीह यीशु द्वारा परमेश्वर की ओर मुड़ना।

परमेश्वर इस्त्राएल की तुलना न पलटी हुई चपाती से करते हैं, (७:८) इसका अर्थ है इस्त्राएल आधा पका; या दूसरे शब्दों में नासमझ था।

परमेश्वर इस्त्राएल की तुलना कबुतर से करते हैं, जिसे आसनी से धोखा दिया जा सकता है और जो नीर्बुद्धी भी है। ये बातता है कि कितनी आसानी से वे भटकाए

जा सकते हैं या कितनी जल्दी पाप में पड़ सकते हैं। परमेश्वर उन्हें छुटकारा देना चाहते हैं। (व. १३)

क्या हम तुरन्त भटक जाते हैं ? क्या हम आसानी से धोखा खाते हैं ? मदद की आवश्यकता हो तो हम कहाँ दौड़ते हैं ? आओ हम प्रभु की तरफ पलटें, वह हमें चंगा करेगा।

उपयोग : क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें बदलने में आप संघर्ष कर रहे हैं ? उनमें बदलने के लिए कौन से कदम उठा रहे हैं ?

''यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मि है।'' (१ यूहन्ना १:९)

******

होशे कि किताब (होशे ८) दिन -४

चक्रवात का फल (होशे ८:१-१४)

छोटी-छोटी बातें जैसे परमेश्वर को भूलना और फिर उसकी बजाए हमारी आपूर्तियों पर विश्वास रखना, ऐसी बातें हमारा विनाश करती हैं।

इस्त्राएल अपने सृष्टिकर्ता को भूल गया (व. १४)। परमेश्वर को भूलना वास्तव में भूलना नहीं; परन्तु सही अर्थ है, उसकी उपेक्षा करना। उनके जीवन में प्रथम स्थान परमेश्वर का नही था।

परमेश्वर को भूलने के फलस्वरुप इस्त्राएल के पाँच पाप :

- परमेश्वर की वाचा का तोड़ना (व.१-३) वाचा शब्द का अर्थ है 'समझौता' यह हर प्रकार से वैयक्तिक है। वाचा तोड़ने का दूसरे शब्दों में अर्थ है परमेश्वर का दिल तोड़ना। आज्ञा न मानना परमेश्वर का दिल तोड़ना है।
- बीना परमेश्वर की इच्छा या स्वीकृती के (व.४) वे परमेश्वर की इच्छा जाने बिना अगुवों (राजाओं) का चुनाव करते हैं। और

उनका चुनाव मूर्खता और पाप पर निर्भर होता। हम मनुष्यों के मन को नहीं पढ़ सकते। हम सिर्फ बाहरी रुप देखते हैं। परमेश्वर लोगों के मनों को जानता है। और एक बार पापी नेताओं का चुनाव हो तो नेतृत्व अधार्मिक और भ्रष्ट हो जाता है।

- मूर्तिपजा (व.४-६): बुरे अगुवों ने बुरे धर्म का नेतृत्व किया परमेश्वर ''गाय के बच्छड़े'' की मूर्तीपूजा को अपराध मानते हैं।
- अधार्मिक देशों के साथ सम्बन्ध (व:८-१०): वे एक अकेले भटके हुए गदहे के समान असीरिया गए। इस्राएल उस परमेश्वर की ओर मुड़ने में असफल रहे जो उनका उद्धारकर्ता और सहायक था।
- गलत वेदियोंका निर्माण (व.११-१३) जिस न्याय का सामना इस्राएल करने वाला था उसका दोषी भी परमेश्वर इस्राएल को ही मान रहे थे। उन्होंने हवा बोया और तुफान काटा।

●●●●●●●●

आज हम क्या बो रहे हैं ? क्या आप परमेश्वर को पहला स्थान दे रहे हैं ? कठीनाईयों में क्या हम परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं ? आओ हम परमेश्वर से अपनी वाचा बनाए रखें।

उपयोग : मसीहियों और अगुवों के लिये प्रार्थना करें कि वे एक स्पष्ट विवेक पाएँ और हर परिस्थिती में आदरपूर्वक रहने की ईच्छा रखें।

''जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होने तुम्हे परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चाल चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो। यीशु मसीह कल, आज और युगानयुग एक सा है। अनके प्रकार के उपरी उपदेशों से न भरमाए जाओ; क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिन से काम रखने वालों को कुछ लाभ न हुआ।'' (इब्री १३:७-९)

●●●●●●

होशे की किताब (होशे ९-१०) दिन - ५

इस्राएल की सज़ा (होशे ९:१-१०:१५)

यह शायद (हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते) फसल काटने के पर्व का समय था जब होशे यह घोषणा करता है। वहाँ शायद खाना, पीना, नाचना, और आनंद फैला था और (९:१-५) का संदेश शायद इस्राएलियों के लिये विचार करने की आखरी बात थी। सन्देश सरल था। परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया क्योंकि उन्होने परमेश्वर को छोड़ दिया था।

अध्याय ९ के दूसरे भाग में इस बात का सबूत है कि न्याय आ रहा था। आनेवाले आक्रमण के बारे में होशे ने स्पष्ट और करूणापूर्ण रूप से बताया पर उन्होंने उसका ठट्टा उड़ाया और उसे मूर्ख और पागल कहा (९:७-८)।

पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। पाप जब हमें अलग करता है, तब आत्मिक ज्ञान जो परमेश्वर कि ओर से आता है वह छीन लिया जाता है और इसकी जगह अन्धापन और धार्मिक बेहरापन ले लेते हैं। जब परमेश्वर हमसे अपने को अलग करते हैं तब हम आशाहीन रह जाते हैं।

अध्याय १० में इस्राएल की तुलना दाखलता से की गई है, परमेश्वर की चुनी हुई दाखलता। उसे एक लहलहाती दाखलता कहा गया है। उसके फल वो नही हैं जो परमेश्वर चाहते हैं परन्तु मूर्तिपूजक धर्म का फल लाती है, जो उसके अपने लिये है।

इस्राएल का मन धोखा देने वाला है (व.२) या दूसरे शब्दो में कहें तो पाखण्डी है। उनका मकसद एक था पर कार्य अलग थे।

जैसा विश्वास विवाह में होता है वैसे ही विश्वास की ईच्छा परमेश्वर ने की। इस्राएल ने ये दावा किया कि वे यहोवा ही की आराधना करते हैं और यह भी कि, यहोवा ही उनका सच्चा परमेश्वर है, लेकिन फिर भी उनके गलत वेदियाँ और ''पवित्र पत्थर' बढ़ते गए।

और अब इस्राएल तलाक के कगार पर खड़ा था। क्या परमेश्वर से हमारे रिश्तों में हम तलाक (अविश्वासीपन) के कगार पर खड़े हैं ? क्या सचमुच परमेश्वर हमारे दिलों का राजा और प्रभु है ? क्या वह हमारा पहला प्रेम है ?

क्या हम वो फल पैदा कर रहे हैं जो वह चाहता है ? क्या हमारा दिल परमेश्वर के लिये उत्सुक है ?

आओ हम यीशु की प्रतिज्ञा याद रखें *"तुम मुझमें बने रहो और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो वह अपने आप नहीं फल सकती वैसे ही तुम भी यदी मुझमें बने न रहो तो नही फल सकते।"*

उपयोग: आप में वो कौनसे धार्मिक गुण हैं जिनके लिये आप जाने जाते हैं ? आपके करीबी तीन मित्रों से पूच्छो कि वे आपमें कौनसे धार्मिक गुण देखते हैं ?

"आत्मा का फल है, प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम"(गल ५:२२)

✱✱✱✱✱✱

होशे की किताब (होशे ११-१२) दिन -६

इस्राएल के प्रति परमेश्वर का प्रेम (होशे ११:१-११)

अनुशासन के संदेशों की श्रृंखला (होशे ४-१०) के बाद, परमेश्वर ने इस्राएल के प्रति उसके प्रेम की याद उन्हें दिलाया। वचन १-४ इस्राएल के भूतकाल के बारे में बताते हैं। परमेश्वर अपनी तुलना एक पिता से करते हैं जीसने अपने पुत्र को बुलाया और प्रशिक्षण दिया; लेकिन पुत्र ने उसके प्रति न कोई प्रतिक्रिया दिखाई और न ही कृतज्ञता। परमेश्वर उन्हें यह भी याद दिलाते हैं कि वे जन्म से नहीं परन्तु गोद लेने के कारण उसके पुत्र कहलाए।

इसी तरह यीशु मसीह में हमें परमेश्वर के पुत्र और पुत्रीयों के रूप में गोद लिया गया है। खोए हुए पुत्र के समान हम परमेश्वर के अनुग्रह और करुणा से बचाए गए हैं। परमेश्वर की दया के बिना हम निश्चय ही नाश हो जाएँगे।

एक पिता की तरह परमेश्वर में भी हम वो सारी भावनाएँ देखते हैं जो कतई अपने बच्चों को छोड़ने के लिये तैयार नही है।

परमेश्वर एक न्याय का परमेश्वर है पर साथ ही वह प्रेम का भी परमेश्वर है। पाप की सज़ा जरूरी है, परन्तु परमेश्वर करुणा से भरे हैं। क्रूस ही है जो परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर के न्याय को प्रसन्न कर सकता है।

इस्राएल का पाप (होशे १२:१-१४)

परमेश्वर द्वारा यहूदा पर लगाए दोष से यह अध्याय आरंभ होता है (व.२)। इन्कार के चिकने रास्ते पर जहाँ तक इस्राएल जा चुका था यहूदा उससे कुछ ज्यादा दूर नहीं था। लेकिन फिर भी वह उसी राह पर था। और यदि वह पश्चाताप नहीं करता तो इस्राएल की तरह उसका पतन भी निश्चित है।

यहूदा के लिये इतना सबकुछ तो इस्राएल (एप्रैम) के लिये क्या ? वह इतना बेईमान, धनी और आत्मविश्वास के गर्व से भरा था कि कभी भी कोई उसे पाप का दोषी करार नहीं दे सकता था (व. ७-८)। परमेश्वर की भूमि से उसे बाहर नीकाला जाएगा।

- अपने लोगों से परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण बर्ताव के बावजूद यह हो रहा था। भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर ने स्वयं को उन पर प्रकट किया था। (व. १०)
- उसने उन्हें छुटकारा दिलाया (व.९)
- उसने उनका ध्यान रखा (व. १३) उन्होंने विद्रोह किया।

जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को क्या हम महत्वहीन समझ रहे हैं ? क्या धार्मिकता के मार्ग में हम नीचे उतर रहे हैं या दिन प्रतिदिन नए बन रहे हैं ?

उपयोग : अपने जीवन के उन क्षेत्रों की सूची बनाओ जब धार्मिकता में आप कमजोर हुए फिर भी अपने परमेश्वर के प्रेम को महसूस कीया।

"अर्थात परमेश्वर की वह धार्मिकता जो मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है। कुछ अन्तर नही रहा; क्यों की सबने पाप किया है और वे सब परमेश्वर की महिमा से वंचित हो गए हैं। परन्तु उसके अनुग्रह के छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है बिना मूल्य चुकाए धर्मी ठहराए जाते हैं। (रोमियों ३:२२-२४)"

✱✱✱✱✱✱

होशे कि किताब (होशे १३-१४)   दिन ७

इस्राएल के प्रति परमेश्वर का क्रोध (होशे १३:१-१६)

परमेश्वर इस्राएल को मरा हुआ मानते हैं (व.१)। परमेश्वर उनके आत्मिक मृत्यु की बात कर रहे हैं क्योंकि वे उस देवता की आराधना कर रहे थे जो परमेश्वर नही था। और इसका अंजाम है उस राष्ट्र का वास्तव में अन्त। दुश्मन उस राष्ट्र पर अपना कब्जा करेंगे और उसका नाश करेंगे।

और यह नीर्देश कहाँ से आएगा ? होशे स्पष्ट चित्रण करता है कि कैसे जिसने पहले उस देश कि रक्षा की अब उसका न्याय करता है । परमेश्वर अन्तिम विनाशक है।

- मिस्र से उनके छुटकारे में परमेश्वर का हाथ होने की बात उन्हें याद दिलाई गई। परमेश्वर उनका ख्याल रखते हैं (व. ५-६)।
- फिर भी लोग परमेश्वर को भूल गए। अब, वह जो उनको छुड़ानेवाला था उनका नाश करनेवाला बनेगा(व.९)।
- दूसरा सन्देश उस आनेवाले आक्रमण को प्रतीत करता है (१५-१६)। विनाश प्रभू की ओर से आता है।

आशीष पाने के लिए पश्चाताप (होशे १४:१-९)

होशे कि किताब परमेश्वर की इस प्रार्थना से समाप्त होता है कि, इस्राएल परमेश्वर की ओर लौटें। एक प्रकार से ये परमेश्वर के अन्तिम शब्द थे। परमेश्वर ने कबुली और पश्चाताप की प्रार्थना की।

पश्चाताप करने में परमेश्वर के अनुग्रह पर नीर्भर रहना भी शामिल है(व.२)। लोगों को सच्चे पश्चाताप का बुलावा देकर परमेश्वर अब पूर्ण रीती से उन्हें पुनःस्थापित करने कि प्रतिज्ञा करते हैं। परमेश्वर तीन बातों की प्रतिज्ञा करते हैं।

- उनके भटक जाने की बिमारी को चंगा करेंगे (व.४)।
- वह उनसे प्रेम करेंगे (व.४)।
- और वह उसके लोगों को फिर से समृद्ध करेंगे (व. ५-७)।

क्या परमेश्वर के प्रतिज्ञाओं का विस्तार हमें अचम्भीत करता है ? उसमें हमें सुन्दरता, बल, कीमत, आनन्द और अधिकता मिलती है।

होशे उन लोगों से जिन में परमेश्वर के वचन की सच्चाई को परखने की बुद्धी है, प्रार्थना करते हुए अपनी बात समाप्त करता है। पाप मृत्यु लाता है, परन्तु आज्ञापालन जीवन का मार्ग है, यह बात आज भी सच्च है के, प्रभु के मार्ग सर्वदा सीधे हैं, और धार्मिक उनपर चलते हैं, परन्तु बलवा करनेवाले ठोकर खाते हैं।

उपयोग: मसीही बनने के बाद आपको परमेश्वर से जो भी आशीष मिले हैं उनकी सूची बनाओ।

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ती से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। उसने अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उस के लेपालक पुत्र बनें। जिससे उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुती हो जिसे उसने हमें अपने "प्रिय" में निःशुल्क दिया है।" (इफि. १:३-६)।

******

योएल की किताब (योएल १-३)   दिन-८

परिचय

योएल, यहूदा के दक्षीण राष्ट्र का एक भविष्यद्वक्ता था। उसने परमेश्वर द्वारा बहुत ही विनाशकारी अनुशासन की भविष्यवाणियों की और साथ ही उन्नत मसीहीयत भविष्यवाणियों की बातें भी कहीं। योएल की तारीख तय करना कठीन है, हमारा अनुमान है कि यह करीब ८३० ई. पू. के समय में रहा होगा।

- भविष्यद्वक्ता के नाम का अर्थ है "प्रभु परमेश्वर है" या यहोवा परमेश्वर है।
- योएल परमेश्वर द्वारा लाए टीड्डीयों के अत्यंत गम्भीर महामारी के बारे में बताता है और साथ ही यह भी चैतावनी देता है कि यदि लोग पूरे मन से पश्चाताप नहीं करेंगे तो इससे कहीं अधिक गम्भीर अनुशासन आ सकते हैं।

* उसकी यह पुकार कि, 'पश्चाताप करो' इस बात पर ज़ोर डालती है कि पश्चाताप मन से हो बाहरी दिखावे की नही। उसका सबसे प्रसिद्ध अनुच्छेद है आत्मा उण्डेले जाने की प्रतिज्ञा (योएल २:२८-३०)।

विलाप का बुलावा (योएल १:१-२:११)

टिड्डीयों के आक्रमण की बात समझाकर योएल लोगों को चेतावनी देता है।

* पश्चाताप के लिये वह पहले धर्मवृद्धों को बुलाता है क्योंकि वे ही लोगों के अगुवे थे। (व. ३)।
* फिर वह पियक्कडों (व.५) और किसानों (व.११) को बुलाता है।
* उसके आखरी गुट है याजक (व.१३-२०)।

पश्चाताप यह था कि वो उपवास के साथ रोते पीटते पूरे मन से परमेश्वर की ओर फिरें। उन्हें अपने कपड़े नहीं पर अपने मनों को फाड़ना था (२:१२-१३)। हमेशा की तरह लोगों को लालच इस बात का था कि अपने मन पर ध्यान देने के बजाए बाहरी धार्मिक रीति रिवाजों पर अधिक भरोसा करें। क्या हमारे मन परमेश्वर की ओर फिरें हैं ? क्या हम सिर्फ अपने कपड़े फाड़ रहे हैं या सचमुच एक टूटा हुआ मन रख रहे हैं ? कौनसी बात अधिक महत्वपूर्ण है कर्म या स्वभाव ? हमारा ध्यान किस पर केन्द्रीत है?

आशीष के साथ अनुशासन भी आएगा (योएल २:१२-३:२१)

* महामारी से तुरन्त राहत (२:१३-२७)।
* आत्मा का उण्डेला जाना (२:२८-३२) आत्मा के आने से यह संभव हुआ कि हर उस व्यक्ति में पवित्र आत्मा वास करेगा जिसने पापों से पश्चाताप किया और क्षमा पाने के लिये बप्तीस्मा लिया। (प्रेरित २:३८-३९)
* यहूदा और यरुशलेम का पुनरुद्धार (३:१-१६)।
* अन्तिम आशीष था मसीह का आना (३:१७-२१)

आशीष हमेशा परमेश्वर अनुशासन साथ लाता है। या दूसरे शब्दों में परमेश्वर दीन को अनुग्रह देता और घमण्डी का विरोध करता है। हम सभी पुनःस्थापित होना चाहते हैं परन्तु पुनःस्थापित होने के लिये पश्चाताप आवश्यक है। जब हम परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं तब वह हमें अधिकाई से आशीष देता है।

उपयोग : भ. सं. ५१ के द्वारा प्रार्थना करें।

"मैं उसी की ओर दृष्टि करुँगा जो दीन और खेदित मन का हो और मेरा वचन सुनकर थरथराता है।" (यशायाह ६६:२)

******

आमोस की किताब (आमोस १-२) दिन ९

परिचय :

* आमोस जिसका अर्थ है "दुःख उठानेवाला" दक्षीण राज्यों के शहर तकोईसे था।
* भविष्यद्वक्ता के रूप में चुने जाने से पहले वह चरवाहा और गुलर के पेड़ों का रखवाला था (७:१४)।
* उसकी भविष्यवाणी यारोबाम द्वीतीय के शासनकाल में हुई थी।
* इस किताब में परमेश्वर के चिन्ता का मूल कारण था सांसारिक लोभ।
* इस्राएलियों के वाचा की भूमि में आने से पहले सांसारिक लोभ परमेश्वर की चिन्ता का कारण था। (व्य. वि. ६:१०-१२, ८:६-१४)। जब सांसारिक जीवन सुखमय चलता है तब धार्मिकता में टिके रहने कि चुनौती आसान नही होता।

इस्राएल के पड़ौसियों का न्याय (आमोस १:१-२:५)

* दमिश्क-उनका पाप था गिलाद वासियों (गाद और रुबेन के गोत्र) के प्रति क्रूरता। परमेश्वर का न्याय था विनाश और गुलामी।
* गाजा (पलिश्ती)- उनका पाप था बन्धुआ बनाके दूसरे राष्ट्रों के वश में देना और न्याय था सर्वनाश।
* सोर - इनका पाप भी बन्धुआओं का व्यापार था।
* एदोम - अपने रीश्तेदारों से घृणा यह उनका पाप था।
* अम्मोन - उनका पाप था गर्भवती स्त्रियों का पेट चीरना।
* मोआब - उनका पाप था एदोम के राजा की हड्डीयों को जलाना।

यहाँ दिलचस्प बात ये है कि परमेश्वर के नज़रों से और न्याय से कुछ नही बचता। यह जानकर सांत्वना मिलती है कि हरएक क्रूरता का हिसाब लिया जाएगा।

यहूदा और इस्त्राएल का न्याय (आमोस २:६-१६)

- यहूदा- उसका पाप था प्रतीकात्मक देवी देवताओं की पूजा करने के लिये परमेश्वर के नियमों का तिरस्कार ।
- इस्त्राएल- कई पाप दर्ज हैं अ) सामाजिक अन्याय ब) व्यभिचार (वैश्यागमन) क)मूर्तीपूजा (अन्य देवताओं की पूजा) ड) परमेश्वर के प्रति बलवा।
- उनका न्याय यह था कि जब उन पर विनाश काल आए तब वे भाग न पाएँ।
- भविष्यवाणी ७२२ ई. पू. में असीरियों द्वारा उस समय पूरी की गई जब उत्तरी इस्त्राएल बन्धक बनाया गया(२ राजा १७:५-२३)।

परमेश्वर सिर्फ अपने वाचा के लोगों के लिए ही नही परन्तु आस पड़ौस के देशों के लिये भी चीन्तीत थे । परमेश्वर एक मात्र और धार्मिक न्यायाधिश हैं। परमेश्वर लोगों से उनके कार्यों का हिसाब लेते हैं । क्या हमारी यह ईच्छा कि परमेश्वर का वचन हमें वही करने के लिये राजि करे जो सही है?

उपयोग : आप के आज के जीवन में परमेश्वर के लिये सबसे अधिक, चिन्ता की बात क्या हो सकती है।

"परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है।" (सभोपदेशक १२:१३)।

******

आमोस की किताब (आमोस ३-४) दिन-१०

इस्त्राएल का नाश (आमोस ३:१-१५)

इस पाठ में हमें हमारा ध्यान इन अध्यायों के "धर्मसन्देश" पर केन्द्रीत करना चाहिये। परमेश्वर इस्त्राएल के विरूद्ध बोले (३:१-२)

- जिसके साथ उनका एक खास सम्बन्ध था।
- जिसे अब वह उनके पापों की सजा देगा।
- अपने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा बिना प्रकट किये परमेश्वर कुछ भी नही करते (३:७-८)।
- जैसे सिंह गर्जता है उस प्रकार परमेश्वर बोले और आमोस को भविष्यवाणी करनी ही थी।

- इस्त्राएल की दुष्टता के गवाह बनाने के लिये अशदोद और मिस्त्र को बुलाया गाया। (३:९-१०)
- शत्रु इस्त्राएल को लूट लेंगे (३:११-१५)

क्या बिना विलम्ब (देरी) किये हम परमेश्वर के वचनों को सुनते हैं ? अपने वचनों के द्वारा परमेश्वर लोगों पर अपनी योजनाएँ प्रकट करते हैं। परन्तु क्या हम उसकी योजना और प्रतिज्ञा पर विश्वास रखते हैं ? परमेश्वर के क्रोध से कौन बच सकता है? सिर्फ वही जो मसीह के साथ खड़े होंगे। परमेश्वर के अचूक न्याय से बचने का सहारा केवल मसीह में ही पाया जा सकता है।

इस्त्राएली स्त्रियों की भ्रष्टता (आमोस ४:१-३)

- इस्त्राएलि स्त्रियों को "बाशन की गाय" कहा गया है, वे कभी सन्तुष्ट नहीं होती।
- वे कंगालो और जरुरतमन्दों पर अन्धेर कर रही थी। (४:१)
- दाखरस के लिये तड़प रही थीं। (४:२)

परमेश्वर ताना मारते हुए उन्हें कहते हैं कि वे बेथेल और गिलगाल में अपने झूठे देवताओं की आराधना करें (४:४-५)। इससे यह बात साफ दिखाई देती है कि वे परमेश्वर से कितनी दूर चले गए थे। उन्हें पश्चाताप कराने के परमेश्वर के प्रयत्न के प्रति अपनी प्रतिक्रिया दिखाने में वे असफल हो चुके थे ।

*अकाल (४:६) * सूखा (४:७-८) * महामारी (४:९) प्लेग और युद्ध (४:१०) *भूकंप (४:११)

नैसर्गिक आपतियों द्वारा परमेश्वर ने उनका ध्यान आकर्षित करना चाहा। परमेश्वर की कोशिशों को उन्होने क्यें नही माना ? शायद उन्हें लगा होगा कि यह एक योगायोग है। क्या हम उन सम्भव बातों के लिये तैयार हैं कि हर एक आपतियों द्वारा परमेश्वर हमें कुछ सिखाना चाहते हैं ?

अनेक चेतावनियों को सुनने में असफल होने के बाद अब उन्हें अपने परमेश्वर जो उनका न्याय करनेवाले हैं, उनसे मिलने कि तैयारी करनी चाहिये।

उपयोग : कल्पना करो कि ऊपर दिये गये आपतियों में से एक में आप फँसे हों, आपको कैसा महसूस होगा?

"परमेश्वर के समर्थ हाथ के नीचे दीनता से रहो जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। अपनी सारी चिन्ताएँ उसी पर डाल दो; क्योंकि उसको तुम्हारी चिन्ता है (१पतरस:५:६-७)।"

******

आमोस की किताब (आमोस ५-६) दिन ११

इस्राएल के लिये विलाप (आमोस ५:१-१७)

आनेवाले पतन के कारण इस्राएल को विलाप करने को बुलाया गया (व.१-२)। और सिर्फ कुछ बचे हुए ही बचे रहेंगे (व. ३)। परन्तु परमेश्वर फिर भी उन्हें पश्चाताप करने को कह रहे थे ; क्योंकि अब भी कुछ आशा थी।

- प्रभु की खोज करो और जीवित रहो (व. ४-७)
- उसकी खोज करो जो सर्वशक्तिमान है (व. ८-९)
- वह तुम्हारे अनेक पापों को जानता है। (व. १०-१३)
- भलाई की खोज करो, शायद परमेश्वर अनुग्रह करे (व.११-१५)

क्या आज हम परमेश्वर को खोज रहे हैं ? क्या हमारा जीवन ये दर्शाता है कि हम परमेश्वर को खोज रहे हैं ? हम जब तक जीवीत हैं तब तक लगातार परमेश्वर को खोजते रहें। और परमेश्वर की खोज का अर्थ है भलाई की खोज बुराई की नही।

प्रभु का दिन (आमोस ५:१८-६:१४)

प्रभु का दिन निकट है। मैदानों और सडकों पर विलाप होगा।

- प्रभु के दिन की ईच्छा पापी न करें ; क्योंकि यह घोर अन्धकार का दिन होगा (व.१८-२०)।
- उनके धर्म के दिखावे के कारण परमेश्वर दूर हो गए, जबकि वहाँ धार्मिकता और न्याय होना चाहिये(व.२१-२४)।
- क्योंकि उन्होंने कभी भी सही रूप से परमेश्वर की सेवा नही की, जंगल में भी नहीं (व. २५-२६)।
- इसीलिये उन्हें "दमिश्क के पार" ले जाया गया (व. २५-२७)

- हाय उनपर जो सुख से हैं, यह विश्वास कर रहे हैं कि सामरिया उनकि रक्षा करेगा(६:१-२)
- हाय उन पर जो यह कहते हैं कि, प्रभु का दिन अभी बहुत दूर है। वे अपनी विलासीता मे भौंक रहे हैं जब कि उनके भाई-बन्धु पीड़ित हैं (६:३-६)।
- वे सबसे पहले बन्धुआई में जाएँगे (६:७)।
- विनाश आ रहा है क्योंकि परमेश्वर उन के घमण्ड से घृणा करते हैं (६:८)।
- एक विनाश जहाँ पुरूष नही के बराबर होंगे और उनके घर नष्ट कीये जाएँगे (६:९-११)
- अपने ही बल पर घमण्ड करके उन्होंने न्याय और धार्मिकता को दूषित कर दिया (६:१२-१३)

हमारे जीवनों में भी प्रभु का दिन आ रहा है। यह एक न्याय का दिन है। यह ऐसा दिन होगा जब हमारे जीवन का हिस्साब हमें परमेश्वर को देना होगा। उस दिन का सामना हम कैसे करेंगे ? हमारा बचाव हम कैसे करेंगे? पश्चाताप की बुलाहट हमारे लिये भी है। विश्वास और आज्ञापलन करके परमेश्वर की खोज करो। "परमेश्वर की खोज करो और जीवीत रहो।"

उपयोग : इस सप्ताह अपने प्रार्थना जीवन में बदलाव लाने का निर्णय करो। (घुटनों पर आकर सुबह सवेरे, बाहर चलते हुए, खास जगहों पर...)

"सकरे द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न करो। मैं तुमसे कहता हूँ उस द्वार से बहुत लोग प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे। लूका : १३:२४"

******

आमोस की किताब (आमोस ७-९) दिन १२

टिड्डीयों का दर्शन (आमोस ७:१-३)

आमोस को एक के बाद एक पाँच ''दृष्टांत'' दिखाई दिये। टिड्डीयों का दृष्टांत - प्रभु ने आमोस को दिखाया कि टिड्डीयों के झुण्ड के झुण्ड सारी उपज को नष्ट कर हे थे । याकूब (इस्त्राएल) की तरफसे आमोस रो पड़ा। प्रभु ने उनका रोना सुना और पछताया कि फिर से टिड्डीयों की महामारी न होगी ।

आग का दर्शन (आमोस ७:४-६)

प्रभु परमेश्वर ने आमोस को ऐसी आग दिखाया जिसमें ''महासागर'' और देश जलकर भस्म हो रहे थे। एक बार फिर याकूब की ओर से आमोस रो पड़ा। प्रभु ने फिर उसकी बात सुनी और पछताया कि फिर से इस्त्राएल पर ऐसा भीषण अग्नीकाण्ड ना होगा।

साहुल का दर्शन (आमोस ७:७-९)

प्रभु परमेश्वर एक दिवार पर हाथ में साहुल लिये खड़े हैं। प्रभु ने कहा कि वह इस्त्राएल के बिचोंबीच साहुल लगाएंगे, और जहाँ मूर्तीपूजा होती है उन स्थानों और यारोबाम के घराने को नाश कर देंगे। अमस्याह ने, जो बेतेल (मूर्तीपूजा का केन्द्रस्थान) का याजक था, आमोस पर यह दोष लगाया कि उसने इस्त्राएल के राजा यारोबाम के विरूद्ध षडयंत्र रचा है (७:१०-११)

अमस्याह, आमोस से वापस उसके देश यहूदा को जाने को कहता है (७:१२-१३) परन्तु आमोस अपने भविष्यवाणि के कार्य का बचाव करता है (७:१४-१५) और फिर आमोस, अमस्याह और इस्त्राएल के विरूद्ध भविष्यवाणी करता है (७:१६-१७)।

ग्रीष्म ऋतु के फलों का दर्शन (आमोस ८:१-१४)

आमोस को ग्रीष्म ऋतु के फलों का एक टोकरा दिखाई पड़ता है (जो शायद पूर्णतः पके हुए थे)। परमेश्वर इस बात को प्रकट करते हैं कि इस्त्राएल का अन्त निकट है और न्याय के लिये वह पूरी तरह पक चुका है।

वेदी पर खड़े प्रभु का दर्शन (आमोस ९:१-१५)

वेदियाँ नष्ट हो जाएँगी और कोई भी बचने न पाएगा (९:१-१४)। राज्य पूरी तरह नष्ट हो जाएगा। बचे हुओं के भविष्य में पुनर्वसन की बात कही गई। (९:११-१२)। परमेश्वर के लिये न्याय अन्तिम शब्द नही है। न्याय के बाद आशा (बचे हुओं के लिये) है।

परमेश्वर ने इस्त्राएल के द्वार यह शिक्षा दी है कि आज्ञा पालन हमेशा आशीष और अवज्ञा (आज्ञा का उल्लंघन) हमेशा न्याय लाता है। यह इस्त्राएल पर तो लागू होता ही है, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति और कलीसिया पर भी लागू होता है। क्या मसीही अपने को दीन बनाकर, बुराई के मार्ग से पलटकर प्रार्थना और परमेश्वर की खोज करेंगे ? यदि हाँ, तो परमेश्वर उन्हें आशीष देंगे। यदि नही, तो उनका न्याय होगा। पवित्र परमेश्वर चाहते हैं कि उसके अनुयायी भी पवित्र हों।

आखिर में अनुग्रह की शिक्षा है। अपने लोगों से निपटने में परमेश्वर अनुग्रही है। इस्त्राएल के साथ वह अनुग्रही है । वह कलीसिया के साथ भी अनुग्रही है। प्रश्न यह है कि, क्या हम परमेश्वर के अनुग्रह का स्वीकार करेंगे या उसे पीठ दिखाकर चल देंगे ?

उपयोग : परमेश्वर के राज्य में एक शिष्य के नाते आप क्या देखते हो ?

''देख प्रभु की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए। (२ इतिहास १६:९)''

ओबाद्याह की किताब (ओबाद्याह - १) दिन : १३

परिचय

- ओबद्याह का अर्थ है, 'प्रभु का सेवक'।
- २१ वचनों के इस छोटी सी किताब के अलावा इस भविष्यद्वक्ता के बारे में और कुछ भी जानकारी नही है। (इब्री पवित्र शास्त्र मे यह सबसे छोटी किताब है।)
- एदोमि जो एसाव के वंशज हैं उनके बारे में परमेश्वर के कहे वचन इस किताब में हैं।
- एदोमियों और इस्त्राएलियों में बैर तब पैदा हुआ जब एसाव ने अपना उत्तराधिकार याकूब को बेच दिया और बाद में उसके साथ छल हुआ (उत्पत्ती २५-२७)।
- जब इस्त्राएली मिस्र से बाहर (निर्गमन) आए तब दोनों देशों में युद्ध शुरू हुआ (गिनती २०) । ओबाद्याह की भविष्यवाणि के अनुसार एदोम राष्ट्र का हमेशा के लिये नाश होना था (व. १०) और १०० ए. डी. तक उनका पूरा नामों निशान मिट गया।

घमण्ड विनाश लाता है (ओबाद्याह १-१४)

- उनके घमण्ड ने उन्हें इस धाखे में रखा कि उनका विनाश असंम्भव है ।
- उन्हें अपने स्थानों पर गर्व था (व. ३-४) ''पहाडों की दरारों और ऊंचे स्थानों में रहनेवाले' ।
- उन्हें अपने बुद्धिमान व्यक्तियों पर गर्व था (व. ८)।
- उन्हें अपने शूरविरों पर गर्व था (व. ९)।

गर्व हमेशा अपने अन्दर अपने ही विनाश के बीज साथ लिये चलता है। यह एक टाईम बॉब के समान है जो शैतान हमारे जेब में रखता है । भय सिर्फ इस बात का है कि वात कितनी बड़ी है। वो शायद जल्दी जले या देर से जले। लेकिन वह हर हालत में फटेगा न्याय के दिन से पहले नहीं तो न्याय के दिन पर ।

किन बातों में हम घमण्डी हैं? क्या हम दूसरों को नीची नज़र से देखते हैं? या फिर हम औरों की बर्बादी में खुश होते हैं?

हम वही काटते हैं जो हम बोते हैं (ओबाद्याह १५-२१)

यह एक जागतिक सत्य है। हर समय में यह खरा है। हम वही काटते हैं जो हम बोते हैं, एदोमियों ने वही काटा जो उन्होने बोया था।

हमने कल जो बोया उस कारण आज हम क्या काट रहे हैं? हम आनेवाले कल को कैसे बदल सकते हैं? आज धार्मिकता बो कर। संसार लालच दिलाता है कि आज खरीदो पैसे बाद में दो परन्तु परमेश्वर का तरीका हमेशा यही है कि, आज भरो कल काटो।

उपयोगः किन बातों में आप घमण्डी हो ?

''परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है। पर वह दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिये परमेश्वर के आधिन हो जाओ, और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग जाएगा। परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। (याकूब ४:६-८)।''

✻✻✻✻✻✻

योना की किताब (योना १-२) दिन -१४

परिचय :

- योना का अर्थ है 'कबूतर'। यद्दपि वह इस्त्राएल के उत्तरी राज्य का भविष्यद्वक्ता था, पर उसका ईश्वरीय कार्य था असीरिय के मुख्य शहर नीनवे के विरुद्ध प्रचार करना।
- उसका उपदेश बहुत सरल था'' चालीस दिन के बीतने पर नीवने उलट दिया जाएगा। (३:४)
- मत्ती १२:३८-४१, मत्ती १६:४ में यीशु इस छोटे भविष्यद्वक्ता का उल्लेख करते हैं।
- चमत्कारी घटनाओं में यह किताब अनुपम है, इनमें सबसे ज्यादा ध्यान देनेवाली बात है, एक बड़ी मच्छली का योना को निगलना।
- यह चमत्कारी तत्व उदार विद्वानों को इस किताब की विषय सूची पर उपाख्यान करने का कारण बने। फिर भी इन घटनाओं को साहित्यिक

वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वह उसे बचाएगा।

बताने का प्रयास स्पष्ट है जबकी यीशु ने निश्चय ही इसे ऐतिहासीक रूप में लिया।

परमेश्वर से दूर भागना (योना १:१-१७)

- परमेश्वर योना को जाकर प्रचार करने की आज्ञा देते हैं (व.१-२)
- योना आज्ञा न मानने का निश्चय कर उलटी दिशा में भागता है (व.३-४)
- परमेश्वर से दूर जाने का सफ़र इतना आनन्ददायक न था। वो समुद्रि तूफ़ान में घिर जाता है।
- भविष्यद्वक्ता के साहस से बढ़कर यहाँ मुद्दा था गैर यहूदियों के प्रति अंधविश्वास।

आप किन बातों में परमेश्वर से दूर भाग रहे हैं ? क्या अब आप अपने जीवन में किसी तूफ़ान का सामना कर रहे हैं ? वह इसलिये क्योंकि आप परमेश्वर से दूर भाग रहे हैं? अवज्ञा बहुत महँगा पड़ता है। परमेश्वर के विरुद्ध जाने की किमत हमें चुकानी पड़ती है। परमेश्वर की ओर भागना परमेश्वर से दूर भागने से आसान है।

परमेश्वर की ओर भागना (योना २:१-१०)

- भविष्यद्वक्ता को अपनी अवज्ञा का भास होने लगता है।
- विशाल मच्छली (संभवतः व्हेल) द्वारा निगला जाना एक चमत्कार है।
- मच्छली के पेट से परमेश्वर से प्रार्थना करता है । हम किसी भी स्थान से परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं। अपनी प्रार्थना में अपनी इस स्थीती तक पहुंचने का दोष वह नाविकों पर न लगाकर इस बात को स्वीकार करता है, कि इन सबके पीच्छे परमेश्वर का हाथ है। (व.३)
- वह अपने को दीन बनाता है और पश्चाताप करता है।

क्या हमें अपनी अवज्ञा का भास है? जो भी बुरा हो है उसके लिये क्या हम औरों को दोषी ठहराते हैं ? क्या हम यह समझ पाते हैं कि हर बात के पिच्छे परमेश्वर का हाथ है? हमारी प्रार्थनाओं में क्या हम ईमानदार हैं?

उपयोग :इन वचनों में वह कौनसी बातें हैं जिन्हें मानना आपको चुनौतीपूर्ण लगता है?

"यदि कोई मेरे पिच्छे आना चाहे तो वह अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीच्छे हो ले । जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा

यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण खो दे, या उसकी हानी उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ।" (लूका ९:२३-२५)

******

योना की किताब (योना ३-४) दिन १५

परमेश्वर के लिये दौड़ना (योना ३:१-१०)

- योना ने उसी सन्देश का प्रचार किया जो परमेश्वर ने उसे दिया था।
- वह परमेश्वर के कार्य कर रहा है। जबकि उसके स्वभाव में कुछ ज्यादा बदलाव नही था।
- नीनवे के लोगों ने तुरंत पश्चातप किया। राजा से लेकर नीचे तक सभी लोगों का पश्चाताप प्रशंसनीय था। नीनवे के लोग अपनी क्रूरता और दुष्टता के लिये जाने जाते थे । लेकिन पश्चातप संभव था।
- परमेश्वर ने आपत्तियों पर रोक लगाया। करीब १०० वर्षो से भी अधिक समय के लिये परमेश्वर ने नीनवे का नाश रोके रखा। अन्ततः ६१२ ई. पू. नीवने राज्य नष्ट हुआ।

पश्चाताप के लिये कभी देर नहीं होती। जब हम पश्चाताप करते हैं तब परमेश्वर हमें नाश होने से बचा लेते हैं।

परमेश्वर से आगे दौड़ना (योना ४:१-११)

- यहाँ हमें योना का सही चरीत्र दिखाई पड़ता है। हम देख पाते हैं कि मनुष्य परमेश्वर से कितना अलग है।
- योना क्रोधित था । परमेश्वर धिरजपूर्ण था ।
- योना उस पेड़ के लिये आनन्दित था । परमेश्वर पापीयों के पश्चाताप से प्रसन्न था ।
- योना को पेड़ की चिन्ता थी। परमेश्वर को अपने खोए हुए शहर की चिंता थी।

वास्तविक घटनाएँ जिनका हमारे व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव पड़ता है उनके विषय में भावुक होना शायद हमारे लिये आसान हो, परन्तु वहीं महान

आत्मिक सच्चाई जिनका हमारे व्यक्तिगत जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता उसके लिये भावुक होना शायद कठीन हो जाता है। आज हमारी चिन्ता किस बात के लिये है? क्या परमेश्वर भी उन बातों के लिये चिंतीत हैं? अन्ततः परमेश्वर की इच्छा यही है कि सभी पश्चाताप करें (२ पतरस ३:९)।

इस किताब का अन्त एक प्रश्न से होता है, एक ऐसा प्रश्न जिसका कोई लिखित उत्तर नहीं है। यह कोई गलती नही है। इस किताब में कई शिक्षण हैं। लेकिन इस किताब का सबसे महान शिक्षण है – परमेश्वर के दया की महानता। परमेश्वर की दया कितनी महान है? परमेश्वर के इस महान दया का सही माप हमें यीशु के उन फैले हुए हाथों में दिखाई पड़ता है जब यीशु ने हमारे उद्धार के लिये क्रूस पर मौत सहा। यह परमेश्वर के दया कि चौड़ाई है। यह परमेश्वर के प्रेम की लम्बाई है वहाँ तक उसका प्रेम जाएगा।

उपयोग: उन पाँच लोंगो के नाम लिखो जिनके साथ आप अपना विश्वास बाँटना चाहते हैं और इस महीने के अन्त से पहले उन पाँचों से मिलो।

१.   २.
३.   ४.
५.

"किन्तु जिस पर उन्होने विश्वास नही किया, वे उसका नाम क्यों लेंगे? और जिसकी बात उन्होंने नही सुनी, उस पर वे कैसे विश्वास करेंगे ? और फिर प्रचार किये बिना वे कैसे सुनेंगे ? यदि प्रचारक भेजे न जाएँ तो वे क्यों प्रचार करेंगे ? जैसा धर्मशास्त्र में लिखा है "उनके पांव क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार फैलाते हैं। (रोमियों १०:१४-१५)"

✱✱✱✱✱✱

मीका की किताब (मीका १-२)   दिन-१६

परिचय

- मीका का अर्थ है, "वह जो यावेह के समान है।"
- मीका (मोरेशेत गाथ) नामक छोटे से गांव का रहनेवाला था, जो यरूशेलम के खिलाफ प्रचार करने यरूशेलम आया था।
- मीका के लेखन में कुछ मसीही भविष्यवाणियाँ भी हैं।
- उसने यहूदा के राजा योताम, आहाज और हिजकिय्याह के शासनकाल में भविष्यवाणी की।

सामरी नगर और यरूशेलम के प्रति परमेश्वर का न्याय (मीका१:१-१६)

- मूर्तिपूजा की जाती थी (१:३-७,६:१६)
- अमीर गरीबों पर अत्याचार कर रहे थे (२:१-२,८-९)।

हम देख सकते हैं कैसे परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर को छोड़कर स्वयं युद्ध करने के लिये बाहर नीकलते हैं। (१:३)

मीका यहूदा पर आनेवाले न्याय और उसके संकट को देख लेता है। वह देखता है कि लोग बन्धुए बनाए जा रहे हैं तो उन्हें विलाप करने का आवाहन देता है। (१:१६)

मनुष्य की योजना और परमेश्वर की योजना (मीका २:१-५)

लोग अपने दुष्ट योजनाएँ बनाने में व्यस्त थे। शायद उनके मन इतने कठोर हो गए थे कि वे ये समझ ही नही पाए कि उनकी योजनाएँ कितने बुरे थे। परन्तु वो यह भूल गए थे कि परमेश्वर भी योजनाएँ बनाते हैं। परमेश्वर उनके विरूद्ध विनाश की योजना बना रहे थे। (२:३)

झूठे भविष्यद्वक्ता (मीका २:६-१३)

हम देखते हैं कि झूठे भविष्यद्वक्ता बड़े भयंकर थे ।

- अपने पापों के प्रति परमेश्वर के अनुशासन को सुनने को वे कतई तैयार न थे (२:६)।

वे बुराई से प्रेम और अच्छाई से घृणा करते थे। लोग चाहते थे कि भविष्यद्वक्ता बियर और शराब के बारे में भविष्यवाणी करें। (२:११)

क्या हम हमारे जीवन में परमेश्वर के वचनों को गंभीरता से लेते हैं। वचनों में हमें इस बात की चेतावनी मीलती है कि शैतान के कार्य हर प्रकार के झूठे चमत्कारों, चिन्हो और आश्चर्यपूर्ण बातों और हर प्रकार के बुरे बातों में दिखाई देते हैं और उनको धोखे में रखते हैं जो नाश हो रहे हैं । उनका नाश होता है क्योंकि वे सत्य से प्रेम नही करना चाहते और इसीलिये उद्धार नहीं पाते।

उपयोग : आप किन प्रकार के शिक्षणों से आकर्षित होते हैं और क्यों ?

''क्योंकि ऐसा समय आएगा कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे । वे कानों की खुजली के कारण अपनी इच्छाओं के अनुसार अपने लिये अनेक उपदेशक एकत्र कर लेंगे। वे अपने कान सत्य से मोड़ लेंगे और कथा कहनियों पर मन लगाएँगे।(२ तीमु : ४:३-४)''

******

मीका की किताब (मीका ३-५) दिन-१७

परमेश्वर का न्याय (मीका ३:१-१२)

अध्याय ३ में मीका यहूदा के विभिन्न श्रेणी के अगुवों के बारे में विशेष रूप से बात करता है। सरकार की सभी शाखाएँ भ्रष्टाचार से भरी थी और वे सभी दुष्टता में एक दुसरे का साथ देते थे । अध्याय ३ के तीन भाग हैं।

- न्यायाधिशों और उनके न्यायालओं से निपटता है। (व. १-३)
- भविष्यद्वक्ता जो पैसा देनेवालों के बारे में अच्छा बोलते थे उनसे निपटता है (व.५-८) ।
- उन राजनितिज्ञों से निपटता है जो पैसों के द्वारा दूसरों से समर्थन लेते थे (व.९-१२)।

शब्द या वह शर्त जो इस अध्याय को बान्धे रखता है वह है 'न्याय'। यहुदा से न्याय जा चुका था। परमेश्वर न्यायी है और हम सब उसी के रूप में रचे गए हैं। इसीलिये हमें भी न्याय से व्यहवार करना चाहिये । अन्याय करते समय हम अपने परमेश्वर का प्रतिनिधित्व नही करते। फिर परमेश्वर को हम पर न्याय करना पड़ता है।

प्रभु की योजना (मीका ४:१-१३)

अध्याय ४ एक भविष्यवाणी से आरंभ होता है जिससे आशा मिलती है । वह तरह तरह के स्वतंत्रता की भविष्यवाणी करता है।

- कानून (परमेश्वर का वचन) की उपेक्षा करने से बचने की स्वतंत्रता (व. २)
- युद्ध से स्वतंत्रता (व. ३)
- आवश्यक्ताओं से स्वतंत्रता। (व. ४)
- डर से स्वतंत्रता (व.४)

यहाँ एक भविष्यवाणी है कि कैसे परमेश्वर उनका चरवाहा बननेवाला है (व. ६ से आगे)। जैसे किसी ने कहा है, ''एक व्यक्ति के आधिन रहकर भेड़ संघर्ष करेंगे, भूखे रहेंगे और अन्तहिन तकलिफों से घीरे रहेंगे। दूसरे कि देखरेख में वे फूले फलेंगे और सन्तुष्ट बने रहेंगे।'' यदि यहूदा के चरवाहों ने भेड़ को लूटा है तो अब परमेश्वर अपने अपार प्रेम के कारण उनकी चरवाही करेंगे और उन्हें महान सम्पन्नता की ओर ले जाएंगे। भजन संहिता २३ और यूहन्ना १० से हमें पता चलता है कि वह किस तरह का चरवाहा है।

आशा और छुटकारा (मीका ५:१-१५)

परमेश्वर की योजना 'मसीह का आना' है। वह...

- अन्तिम चरवाह है (५:४)
- शान्ति है (५:५)।

उपयोग : परमेश्वर में चारवाहे के रूप में आप कौनसी बातें देखते है ? एक चरवाह (पिता, माता, शिक्षक, अगुवा...) होने के नाते आप कैसे उन गुणों का अनुकरण कर रहें हैं?

१. २. ३.

''हम प्रेम को इस प्रकार जानते हैं, प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिये अपने प्राण दे दिये और हमें भी विश्वासी-भाईयों के लिये अपने प्राण देने चाहिये। यदि किसी के पास संसार की धन सम्पत्ती हो और वह अपने भाई को गरीब देखकर उसपर तरस खाना न चाहे तो उसमें परमेश्वर का प्रेम किस प्रकार बना रह सकता है। हम केवल शब्दों और मुँह से नहीं पर, अपने काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें (१ यूहन्ना ३: १६-१८)''

मीका की किताब (मीका ६-७) दिन-१८

प्रभु का मामला (केस) (मीका ६:१-१६)

इस अध्याय का आरंभ ऐसे लगता है जैसे न्यायालय में कोई कानूनी बहस चल रही हो। यहाँ परमेश्वर स्वयं यहूदा राष्ट्र के खिलाफ एक मामला उठाते हैं। उन्हें ऐसा करना पड़ा क्यों कि मिस्त्र की गुलामि के दिनों से लेकर आज तक परमेश्वर ने उनके लिये जो कुछ भी किया था उसे वे लोग भूल चुके थे। तो उनके पापों में पड़ने का मूल कारण क्या था ? अकृतज्ञता । क्या हमें याद है कि हम कहाँ से आए हैं ? कौन हमें यहाँ तक लाया ?

- परमेश्वर अपने लोगों से तर्क कर रहे थे ताकि उन्हें समझा सके कि परमेश्वर के लिये सबसे महत्वपूर्ण क्या है। '' कि न्याय से काम करें और कृपा से प्रीती रखें, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रतासे चलें । (व.६-८)
- फिरसे परमेश्वर का मुकदमा चल रहा है उनके कपट के तराजू के पापों और धोखे आदि पर । (व. ९-१३)
- इन पापों पर परमेश्वर अपना न्याय सुनता है । यहाँ एक दिलचस्प बात देखने को मिलती है कि यहाँ सज़ा 'विनाश' नही है । लेकिन यह कि वे खाएंगे पर तृप्त न होंगे, जमा करेंगे पर कुछ न बचेगा, बोएँगे पर काट न पाएँगे (व. १४-१६)।

न्याय और प्रतिज्ञा (मीका ७:१-२०)

यहूदा में धार्मिकता के फल को न देखकर परमेश्वर नीराश हो जाते हैं (७:१) । परमेश्वर को पूरा अधिकार है कि वे अपने लोगों से उस बात की अपेक्षा करें। धार्मिकता के बजाय वहाँ बुराई में अपार बढ़त हुई थी । वह समाज के बिगड़ने कि बात करता है।

- नैतिकता में बिगाड़ (७:२)
- राष्ट्र की अगुआई में बिगाड़ (७:३)
- परिवार में बिगाड़ (७:६)
- छुटकारे के लिये किये परमेश्वर के महान कार्य के लिये मीका परमेश्वर की प्रशंसा करता है और इस निष्कर्श पर पहुंचता है कि इस रीति में भी परमेश्वर के समान कोई नही है। वह जानता है कि न्याय होगा। लोगों को बेबीलोन

ले जाया जाएगा । परन्तु जैसे जैसे किताब का अन्त आता है, वह देश निकाला से परे एक और छुटकारे और वाचा की भूमी पर पुनर्मिलन को देखता है। (व. ८-१३,१५-१७)

- '' तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहाँ जो अधर्म को क्षमा करे और अपने निज भाग के बचे हुओं के अपराध को ढांप दे ?'' यह विषयपूर्ण वचन है। (मीका का यह अर्थ भी है कि, ''यावेह के समान कौन है ? (व. १८)।''

मीका में अधिक जोर परमेश्वर के छुटकारे के महान कार्यों पर नही परन्तु इस बात पर है कि परमेश्वर पाप क्षमा करने का और कृपा करने का इच्छुक है और इसी बात को मीका परमेश्वर की अप्रतीम श्रेष्टता का सर्वोच्च मापदण्ड बताता है।

उपयोग :उन शीर्ष्यों की सूची बनाओ जिन्होने आपके साथ परमेश्वर का वचन बाँटा और कृतज्ञता जताने के लिये कुछ करो ।

१. २. ३.

''पर भलाई करना और उदारता न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसी बलिसे प्रसन्न होता है।(इब्री. १३:१६)''

******

नहूम की किताब (नहूम १-३) दिन -१९

परिचय

- नहूम के नाम का अर्थ है ''सांत्वना देनेवाला''। लेकिन नीनवे के लिये उसका सन्देश सांत्वनापूर्ण नही था। नीनवे के बारे में उसकी भविष्यवाणी थी, विनाश।
- एक सौ वर्ष पलहे योना का प्रचार सुनकर इस शहर ने पश्चाताप किया था, परन्तु अब उसके पापों के कारण परमेश्वर के हाथों उसका अन्त निकट था।

* इस महान शहर का अन्त ६१२ ई. पू. हुआ और साथ ही असिरिया देश का भी जिस की यह राजधानी थी कुछ वर्षों बाद पूर्णतः अन्त हो गया। यह किताब इस समय से कुछ ही पहले लिखा गया।
* नहूम पुराने नीयम के उन सात किताबों में से है जिसका उल्लेख नए नीयमो में कहीं नही है (दूसरी किताबों में हैं एज्रा, नेहेमयाह, एस्थर, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत और ओबाद्याह)।

नीनवे का पतन (नहूम १:१-१७)

* परमेश्वर एक जलन रखनेवाला परमेश्वर है जिसका न्याय बदले कि मांग करता है (१:२)।
* वह क्रोध में धीमा है परन्तु दोषी को बिना सजा नही छोड़ेगा (१:३)
* प्रकृति पर उसका नियंत्रण है और अपने न्याय को बताने के लिये उसका उपयोग कर सकता है। (१:३-६)।

उसकी शक्ति और सार्वोच्चता उसपर विश्वास करनेवालों के लिये एक आशीष है। कठिनाईयों में वह एक शरणस्थान है। (१:७)।

नीनवे के पाप (नहूम १:८-३:१९)

* परमेश्वर के प्रति बुरा षडयंत्र रचा (१:११)
* मूर्तिपूजा से भरा था (१:१४)।
* झूठ और लूट से भरा था (३:१)
* लोगों को बहकाने (गलत मार्ग में) और दुरुपयोग करना (३:४)।

भविष्यवाणी का अधिकतर भाग इस शहर के खूनी पतन का काव्यपूर्ण वर्णन है। इन किताबों में सांत्वना सिर्फ उन्हीं लोगों के लिये थी जो परमेश्वर के लोग थे; वह यह था कि, उनके कडुवे, सतानेवाले अपनी ही करणी का फल भुगतेंगे, और वे अन्ततः समुद्री तुफान में घिरेगा जो उसे परमेश्वर के सामने भुगतना है।

वह सन्देशवाहक जो असीरिया के विनाश का समाचार लाएगा उसका स्वागत प्रसन्नता के समाचार देनेवाला और शान्ती का ऐलान करनेवाले कि नाई किया जाएगा (१:१५)। यह किताब इन शब्दों के साथ समाप्त होता है, जितने तेरे पतन का समाचार सुनेंगे वे तेरे ऊपर ताली बजाएँगे, क्येंकि ऐसा कौन है जिस पर तेरी

लगातार दुष्टता का प्रभाव न पड़ा हो? प्रभु के वचनों के अनुसार लोगों कि नज़रों से यह शहर शताब्दियों तक अदृष्य रहा । परमेश्वर ने कहा- और वह बस गया।

उपयोग : उस शिष्य के साथ कुछ समय बिताओ और प्रार्थना करो जो विश्वास में डगमगा रहा हो।

"क्या ही धन्य है वह जो कंगाल की सुधि रखता है । विपत्ती के दिन प्रभु उसको बचाएगा। प्रभु उसकी रक्षा करके उसे जीवित रखेगा और वह पृथ्वी पर भाग्यवान होगा। तू उस को शत्रुओं की ईच्छा पर न छोड़ जब वह व्याधि के मारे सेज पर पड़ा हो तब प्रभु उसे संभालेगा । तू रोग में उसके पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा । (भ. सं. ४१:१-३)"

******

हबक्कूक कि किताब (हबक्कूक १-३) दिन-२०

परिचय :

* उसके नाम का अर्थ है 'आलिंगन'।
* हबक्कूक ने यहूदा (दक्षिणी राज्यों) की सेवा की।
* यह किताब परमेश्वर और नबी के बीच हुई बातचित का ब्यौरा देता है। वह परमेश्वर से पूछता है कि परमेश्वर के स्वयं के राष्ट्र के पापों से नीपटने में और कितनी देर है । फिर वह पूछता है कि कैसे वह उसके अपने लोगों को उनसे भी अधिक दुष्ट राष्ट्र द्वारा सजा दे सकता है ?
* अन्त में जब उसे परमेश्वर के उत्तर का अर्थ समझ आता है तब वह इस किताब का अन्त एक कविता द्वारा करता है।

हबक्कूक का पहला प्रश्न (हब. १:१-४)

अपने लोगों में चल रही दुष्टता से नबी बहुत असन्तुष्ट था। वह जानना चाहता था की क्योंकि परमेश्वर हस्तक्षेप नही कर रहे हैं ।

परमेश्वर का उत्तर (हब. १:५-११)

परमेश्वर बताता है कि कैसे बेबीलोन की सेना यहूदा को सजा देनेवाली है। जबकि बेबीलोनी बहुत दुष्ट थे (व. ६-११) परमेश्वर उनका उपयोग न्याय के हथियार के रूप में करने वाला था।

हबक्कूक का दूसार प्रश्न (हब. १:१२-२:१)

परमेश्वर कैसे इतने दुष्ट राष्ट्र का उपयोग इस प्रकार कर सकते हैं ? परमेश्वर के उत्तर ने हबक्कूक को हिला दिया। हबक्कूक को यहाँ एक चौकिदार के रूप में दर्शाया गया है जो परमेश्वर के उत्तर का इन्तजार कर रहा है।

परमेश्वर का उत्तर (हब. २:२-२०)

- परमेश्वर बेबीलोनियों के स्वभाव से परिचित थे ।
- परमेश्वर का उत्तर था धर्मि अपने विश्वास के द्वारा जीवीत रहेगा (व. ४)
- विश्वास हमें कठिन परिस्थीतियों में टिके रहने में मदद करता है।
- परमेश्वर बेबीलोनियों के पाँच प्रतिज्ञाओं की बात करता है।

हबक्कूक का भजन (हब. ३:१-१९)

- जब नबी परमेश्वर के मार्गों को समझ लेता है तब वह परमेश्वर और उसके योजनाओं का भय मानने लगता है।
- अपने धार्मिक मकसद को पूरा करने के लिये किये गए महान चमत्कारों के न्याय की याद वह दिलाता है।

हम हर बार परमेश्वर की योजनाओं को समझेंगे ही ऐसा नही हैं, लेकिन फिर भी हम हमेशा उसके आधिन रह सकते और उस का भरोसा रख सकते हैं।

उपयोग: आपके जीवन की वह कौनसी घटनाएँ है जिन्हें आप समझ नही पाए ? उनपर आपकी प्रतिक्रिया क्या थी ?

"प्रभु में सदा आनन्दित रहो। मैं फिर कहता हूँ आनन्दित रहो। तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रकट हो । प्रभु निकट है। किसी भी बात की चिन्ता मत करो। हरएक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ती जो हमारे समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेंगे (फिली. ४:४-७)।"

सपन्याह की किताब (सपन्याह १-३) दिन-२१

परिचय :

- इस भविष्यद्वक्ता के नाम का अर्थ है, "वह जिसे प्रभु ने छीपाया है"।
- अध्याय १:१ में अपने पूर्वजों का पता लगाते हुए वह चार पीढ़ी पीछे राजा हिजकिय्याह तक चला गया ।
- इस किताब में यहूदा और यरुशेलम की स्थीती का जो वर्णन है उससे साफ पता चलता है कि अब तक योशीयाह के सुधार कार्य आरंभ नही हुए थे।
- इस नबी के बारे में हम बहुत कम जानते हैं, बजाए इसके कि वह यरुशेलम से था।
- उसके लेखन से हम यह भी जान पाते हैं कि वह उग्र पाप को समाप्त करेने के परमेश्वर के रोष से घिरा था। उसका ध्यान प्रभु के आनेवाले दिन पर केन्द्रित था।

यहूदा का विनाश (सपन्याह १:१-२:३)

- उनका सम्पूर्ण विनाश होगा। (१:२-३)।
- इस विनाश का आरंभ यहूदा से होगा (१:४-१३) । विनाश का कारण था बाल देवता के साथ-साथ परमेश्वर की भी उपसना (व.४), तारागण की उपासना(व.५), और विदेशी चाल चलन को अपनाना (व. ८-९)।
- विनाश को 'प्रभु का भयानक दिन' कहा गया है। (१:१४-१८)
- विनाश से शायद नम्र लोग बच जाएँ (२:१-३)। (राष्ट्र इतने आगे बढ़ चुका था कि वहाँ से लौटना कठिन था। लेखिन वे जो नम्र हैं उनके लिये आशा थी)।

आस पास के राष्ट्रों का विनाश (सपन्याह २:४-३:८)

१) पलिश्ती (व. ४-७). २) मोआब और अम्मोन (व. ८-११), ३) कुश इथियोपिआ को निदेश, जिसका अर्थ मिस्र भी है (व. १२), ४) असीरिया (व. १३-१५)। परमेश्वर दूसरे देशों के विनाश की अपेक्षा कर रहे थे जिसके कारण उसका देश सबक सीखे और पश्चाताप करे। फिर भी यहूदा ने पश्चातप नहीं किया (३:६-७)। इसलिये परमेश्वर इस

संसार का न्याय जलजलाहट भरे क्रोध और अपने भस्म कर देने वाली आग को ऊंडेलकर करना चाहते थे। (३:८)

विनाश के द्वारा बचे हुओं का जन्म होगा (सपन्याह ३:९-२०)

परमेश्वर बचे हुओं का स्वप्न देखते हैं जो उसकी सेवा और उसके नाम की स्तुती करेंगे। बचे हुओं के गुण हैं :-

- शुद्ध भाषा जो परमेश्वर के नाम की स्तुती करेंगे (व.९)
- भेंट लाना (व:१०)
- दीन, नम्र और वे जो परमेश्वर में भरोसा रखेंगे (व:१२)।
- कोई झूठ नहीं (व. १३)।

परमेश्वर बचे हुओं से आनंदित हुआ व उनमें प्रसन्न होता है। उनके लिये गाता है। यहाँ फिर हमें परमेश्वर का मन दिखाई पड़ता है। कैसे वह अपने लोगों से गहरा संबंध बनाने को बेचैन रहता है। क्या हम परमेश्वर के बचाए हुए लोगों में से हैं? क्या हम वो हैं जो उसमें शरण लेते हैं? या फिर हम वो हैं जो उसके क्रोधाग्नि से भस्म होंगे? आओ हम दीन बनकर अपने आपको परमेश्वर के निकट लायें।

उपयोग :अपना मनपसंद गीत परमेश्वर के लिये गाओ और उसके साथ आनंद मनाओ।

"मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुती करूंगा, और धन्यवाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूंगा। यह प्रभु को भायेगा। (भ. सं. ६९:३०-३१)"

●●●●●●

हग्गै की किताब (हग्गै १-२) दिन २२

परिचय

हग्गै अर्थात् 'उत्सव'। मन्दिर के पुनर्निर्माण के लिये लोगों को इकठ्ठा करने में जकर्याह के साथ काम किया। १६ वर्ष पहले बड़े उत्साह के साथ मन्दिर की नीव रखी गई थी (एज्रा ३:१२)। लेकिन बादमें पड़ोसी लोगों से सताव के कारण (एज्रा ४:१-५) यहूदियों ने आशा छोड़ दी। इस भविष्यवाणी में (५२० ई. पू.) चार संक्षिप्त संदेशों का समावेश है जो चार महिने के अन्तराल में दिये गए।

मन्दिर का पुनर्निर्माण (हग्गै १:१-१५)

हग्गै ने स्पष्ट रुप से यह बताया कि यह संदेश परमेश्वर की ओर से है। ३८ वचनों के अपने छोटे से किताब में वह करीब २६ बार कुछ ऐसा लिखता है, "प्रभु की यही वाणी है।" जो कार्य उसे दिया गया था उसे उसने पूरा किया, चार वर्षों में मन्दिर का पुनर्निर्माण हुआ (एज्रा ६:१५)। लोग अपने घरों को बनाने में उत्सुक थे, जब कि परमेश्वर का भवन उजाड़ पड़ा था (व. ४)। परमेश्वर ने उन्हें याद दिलाया कि गलत प्राथमिकताओं के कारण वे संकट में पड़े थे (व. ५-११)। इस सन्देश को अमल में लाने में उन्हे तीन सप्ताह से ज्यादा समय लगा (व.१५)। हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकताएँ क्या हैं?

भविष्य की महिमा भूतकाल की महिमा से महान (हग्गै २:१-९)

दूसरा सन्देश यह था कि लोग ये सच्चाई जानें कि परमेश्वर अवश्य उनके साथ हैं। बुजुर्ग जिन्हों ने पहलेवाला मन्दिर देखा था वे नए मन्दिर से बहुत निराश हुए (व. ३)। लेकिन परमेश्वर ने उन्हें याद दिलाया कि वह पहले कि तरह उनके साथ है (व. ५)। परमेश्वर ने उन्हे याद दिलाया कि मन्दिरका पुनर्निर्माण मसीह को लाने की योजना है (व. ९)। जिसका अर्थ है उसकी धार्मिक महिमा और भी महान होगी।

कठिनाईयाँ-ईश्वरीय अनुशासन जैसे (हग्गै २:१०-१९)

परमेश्वर ने लोगों को बुलाया ताकि उनके मन पवित्र हों; ना कि आत्मसंतुष्ट, परमेश्वर एक उदाहरण का उपयोग करते हैं। पवित्र मांस से किसी भी वस्तु को छूने से वह पवित्र नहीं हो जायेगा, परंतु दुषित व्यक्ति किसी भी वस्तु को छूकर उसे दुषित कर सकता है। दूसरे शब्दो में एक स्वस्थ व्यक्ति का संपर्क अस्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ नहीं कर सकता। लेकिन एक बीमार व्यक्ति की बीमारी दूसरे व्यक्ति को लग सकती है। तो परमेश्वर का मुद्दा था कि, पवित्र कार्य उन्हें पवित्र नहीं बना सकता। परंतु यदि उनके मन पवित्र हैं तो वे पवित्र कार्य कर सकते हैं। अच्छे काम से हमारा उद्धार नहीं होगा। सही बात तो यह है कि हम अच्छे काम करते हैं क्योंकि हम बचाए गये हैं।

अन्तिम आशिष है मसीह का आना (हग्गै २:२-२३)

जरुब्बाबेल को मसीह के वर्ग की तरह दर्शाया गया है । जरुब्बाबेल यीशु की वंशावली से ही है (मत्ती १:१२-१३)। यह भविष्यवाणी समाप्त होती है अपने मकसद को पूरा करने के साथ जो है लोगों को इस बात की प्रेरणा देना कि वे वास्तविक (शारिरीक) मंदिर का पुनर्निर्माण करें - ताकि अप्रतीम मंदिर-यीशु मसीह की कलीसिया - के निर्माण का मार्ग तैयार हो सके ।

उपयोग : आप अपना समय और पैसा कहाँ/किसमें निवेश कर रहे हैं ?

"स्वर्ग का राज्य खेत में छूपे हुए धन के समान है । किसी मनुष्यने उसको पाया और छिपा दिया । तब वह आनंद में भरा हुआ गया । उसने अपना सबकुछ बेच दिया और उस खेत को मोल ले लिया (मत्ती १३:४४)।"

******

जकर्याह की किताब (जकर्याह १-२) दिन-२३

परिचय

- जकर्याह जिसके नाम का अर्थ है " वह जिसे परमेश्वर याद रखता है" ने हग्गै के साथ पुनर्वसन के दिनों में काम किया ।
- सन ५३८ ई. पू. जेरुब्बाबेल के समय जब बन्धुत्व से छूटकर लोग लौटे उसके तुरन्त बाद यह निर्माण का कार्य आरंभ हुआ।
- फिर भी १६ वर्षों बाद भी मन्दिर का काम पूरा नही हुआ था। इसीलिये हग्गै ने भविष्यवाणि (प्रचार) करना आरंभ किया कि काम करना शुरू करें और जकर्याह उसके साथ जुड़ गया।
- उनके काम का यह नतीजा हुआ कि सन ५१६ इ. पू. में मन्दिर का काम पूरा हुआ (एज्रा ६:१५)।

पहला दर्शनः मेहंदी के वृक्षों के बीच मनुष्य (जक.१:१-१७)

- इस दर्शन का मूल सन्देश यह है कि परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने सारे संसार का निरीक्षण किया और इस बात का यकिन दिलाने में सक्षम हुए कि निश्चय ही मन्दिर के पुनर्निर्माण के कार्य में परमेश्वर सफल होंगे।

- हर राष्ट्र पर परमेश्वर का नियंत्रण था। घोडों के रंग यहाँ कुछ इस तरह की बात स्पष्ट कर सकते हैं जैसे; युद्ध (लाल), अकाल(भुरा) और विजय (सफेद) ।

क्या हम सचमुच यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर की शक्ति सारे राष्टों पर है? क्या हम यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर की योजना अन्ततः सफल होगी ?

दूसरा दर्शनः चार सींग और चार लोहार (जक. १:१८-२१)

- सींग का अर्थ है शक्तियाँ (दूसरे राष्ट्र) जिन्होंने परमेश्वर के राष्ट्र को तीतर बितर किया।
- चार - है संसार (जगत)।
- लोहार - हैं परमेश्वर के हथियार; उन विरोधि शक्तियों के विनाश के लिये जिन्हों ने इस्त्राएलियों को चोट पहुंचाई थी।
- इस दर्शन का मूल सन्देश यह है कि शत्रुओं के विरोध के बिना लोग मन्दिर नीर्माण का कार्य पूर्ण कर सकते हैं। परमेश्वर को अपनी योजना पूरी करने से कोई भी शक्ति रोक नही सकती।

तीसरा दर्शनः नापने की रस्सी के साथ एक व्यक्ति(जक.२:१-१३)

- यरुशेलम के लोग अपने शारीरिक स्थीती और त्वरीत भविष्य की चिन्ता में लगे थे।
- सन्देश यह है कि, परमेश्वर पूरी तरह से उनकी जरुरतों का ध्यान रखेंगे और उनकी रक्षा करेंगे।
- परमेश्वर मसीही युग भी बताते हैं (व. १०-१३)। मसीह के द्वारा परमेश्वर संसार को आशिष देने वाले हैं।
- हम परमेश्वर के इस मजबूत अपील (प्रार्थना) को भी देखते हैं जो वे अपने लोगों को बन्धुआई से छुडाकर उनके अपने देश में लाने के लिये करते हैं (व. ६-७)। जैसे हम पहले उसके राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करते हैं तो हमारी जरुरतों का ध्यान रखा जाता है।

उपयोगः अपनी मिनिस्ट्री / कलीसिया में एकता के लिये प्रार्थना करें। अपने परिवारिक गुट के हर शिष्य के लिये प्रार्थना करें।

"हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और बिनती करते रहो। तुम जागते रहो ताकि तुम सब पवित्र लोगों के लिये लगातार बिनती करो।" (इफि. ६:१८)

✱✱✱✱✱✱

जकर्याह की किताब (जकर्याह ३-४) दिन-२४

चौथा दर्शनः महायाजक के लिये स्वच्छ पोशाक (जक. ३:१-१०)

- यहोशू याजक का प्रतिनिधित्व करता है।
- उनके पिछले पापों (गन्दे वस्त्र) के कारण शैतान उनकी याजकता पर अयोग्यता का दोष लगा रहा था।
- परमेश्वर उनके पापों को क्षमा कर फिर से उन्हें अपनी सेवा में लगता है। (स्वच्छ वस्त्रों द्वारा दिखाया गया है।)
- अन्ततः आनेवाले उस महायाजक जिसे 'शाख' कहा गया है उसके प्रतिक थे यह याजक।
- पत्थर का अर्थ कलीसिया हो सकता है (दानिएल २:३४-३५ भी पढ़ें)। सा प्रतीक हैं ।
- एक हि दिन में पाप से छुटकारा प्रतीक है यीशु के क्रूस पर दिये बलिदान का। आज हम भी राज पदधारी याजक हैं (१ पतरस २:९) जन्म से नहीं परन्तु यीशु के रक्त से हमारे पापों को धोए जाने के कारण (प्र.वा.१:६)।

पाँचवा दर्शन : सोने का दिवट और जैतून के दो वृक्ष (जक. ४:१-१४)

- यहाँ का दिवट मूसा के नीयम में बताए पवित्र स्थान में रखे दिवट के अनुरूप है।
- पिछला दर्शन; याजकता को शुद्ध किया गया। अब राज्य के आम लोग (जेरुब्बाबेल) भी परमेश्वर की निगरानी में देखे गए।
- सफलता का कारण यह है कि परमेश्वर उन के साम्हने के पाहड़ों (रुकावटों) को निकाल देंगे और सफलता मनुष्य कि नहीं परन्तु परमेश्वर कि शक्ति से प्राप्त होगी।
- दो जैतुन के पेड़ दिवट को लगातार तेल दे रहे थे, जिसका अर्थ हो सकता है यहोशु और जेरुब्बाबेल का मन्दिर पुनर्निर्माण के काम में लगे रहना।
- हमें सही में तेल की आपुर्ति उस से होती है जो याजक भी और भविष्यवक्ता भी है, जिस का नाम है 'यीशु मसीह'। वही है जो हमें भरपूरता से पवित्र

आत्मा देता जो जीवन के पानी के सोते जैसा हमारे भीतर बहता है।

उपयोगः आपके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में शैतान के दोष और परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बारे में लिखो।

क्षेत्र	शैतान के दोष	परमेश्वर की प्रतिज्ञा
१.		
२.		
३.		

"मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हुँ। मैं स्वयं बुद्धि से परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का दास हूँ। अब जो यीशु मसीह में हैं, उनपर दण्ड की आज्ञा नहीं। वे शरीर के अनुसार नही वरन् आत्मा के अनुसार जीवन बिताते है। जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है। (रोमियों ७:२५-८:२)"

✱✱✱✱✱✱

जकर्याह की किताब (जक. ५-६) दिन -२५

छटवाँ दर्शनः उड़ता हुआ कुण्डल-पत्र (जक.५:१-४)

- इस कुण्डल-पत्र में दो विशेष पापों के विरूद्ध न्याय लिखा था, यह उनके लिये था जो एक दूसरे के घर में चोरी और झूठी शपथ खा रहे थे।
- लोग सांसारीक वस्तुओं के लोभ में पड़े थे।

एक संतुष्ट जीवन बीताना सीखना आनन्दपूर्ण जीवन के रहस्यों में से एक है। परमेश्वर ने हम सभी को अलग-अलग परिस्थिती में रखा है, हमें संतुष्ट रहकर परमेश्वर को महिमा देना चाहिये।

सातवाँ दर्शनः टोकरी में एक स्त्री (जक. ५:५-११)

- टोकरी में स्त्री सभी लोगों के पापों का प्रतीक हैं। लोगों के अविश्वासीपन को स्त्री के रूप में दर्शाया गया है।

* परमेश्वर उनके पापों को यरुशेलम से बहुत दूर नीकालने वाले थे।
* सन्देश यह था कि परमेश्वर लोगों के पापों को एक प्रकार की सीमा में बान्धना चाहते थे।

पाप अपने साथ विनाश के बिज लेकर चलता है। सभी पापों का अन्त मृत्यु है। लेकिन पश्चाताप आशा लाता है।

आठवाँ दर्शनः चार रथ (जक ६:१-८)

* ये रथ प्रतीक हैं, राष्ट्रों पर परमेश्वर के नीयंत्रण के द्वारा परमेश्वर के लोगों की सुरक्षा।
* अन्त में परमेश्वर ने उसके लोगों को शान्ती दिलाई।

परमेश्वर ने हमें शान्ती दी है; वह शान्ती जो सबकी समझ के परे है। परमेश्वर को समर्पण करने से शान्ती मीलती है। पवित्र आत्मा द्वारा बिताया हुआ जीवन एक शान्ती पूर्ण जीवन होता है।

यहोशू के लिये एक मुकुट (जक ६:९-१५)

* यह मुकुट सोना और चान्दी दोनों से बना है। यह प्रतीक है महायाजक और राजा के दो दफ्तरों का जिसपर आनेवाली शाख का अधिकार है।
* जब कलीसिया की स्थापना होगी तब यीशु, अपने राज्य के महायाजक और राजा दोनों होंगे।

मसीह धार्मिकता के राजा, सालेम के राजा, शान्ती के राजा और महान महायाजक हैं। उसके दोनों दफ्तर आज भी जारी हैं, हमें शान्ती देना; और दूसरा पापियों और परमेश्वर के बीच शान्ती।

उपयोगः आपके जीवन की वो कौनसी सांसारीक जरूतें हैं जिनमें आप सन्तुष्ट नही हैं?

"पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है। न हम इस संसार में कुछ लाए हैं और न यहाँ से कुछ ले जा सकते हैं। यदि हमारे पास खाने और पहिनने को हो तो इन्ही पर सन्तोष करना चाहिये। पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परिक्षा, जाल-फन्दे तथा उनके व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फँसते हैं जो मनुष्यों को बिगाड देती है, और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं। (१ तिमु .६:६-९)"

******

जकर्याह की किताब (जक. ७-८) दिन-२६

न्याय और दया, उपवास नहीं (जक ७:१-१४)

* बेथेल से अगुवों का एक गुट यह जानने के लिये आया था कि क्या उपवास के दिनों को वैसे ही जारी रखा जाए। मूसा के नियम में सिर्फ एक उपवास की जरूरत थी-जिसका संबंध प्रायश्चित के दिन से था।
* परमेश्वर उनसे कुछ टटोलने वाले प्रश्न पूछते हैं जैसे; उनके उपवास का कारण क्या था (व. ४-७)।
* परमेश्वर ने कहा उन्हों ने परमेश्वर के लिये नहीं वरन् अपने स्वयं के लिये उपवास रखा। (व. ५)
* परमेश्वर उनसे कहता है कि बेहतर होगा यदि वे दूसरों से धार्मिक बर्ताव करें।(व.८-१४)
* लगातार किये गये उपवास और प्रार्थना हमारे जीवन में प्रेम और न्याय की जगह नहीं ले सकते।
* परमेश्वर उनके ध्यान और रीति रीवाज से अधिक उनके मन और स्वभाव के लिये चिन्तीत थे।
* सिर्फ बाहरी बातों पर ध्यान देने और प्रेम करनेवाले परमेश्वर और दूसरों को भूल जाने से हमारा मन वज्र (अति कठोर पत्थर) सा बन जाता है। (व. १२)

हमारी प्रवृत्ति किस पर अधिक ध्यान देनेवाली है, बाहरी बातों पर या हमारे हृदय पर? आपके लिये कौनसी बात ज्यादा आसान लगती है, उपवास रखना या औरों के साथ धार्मिक बर्ताव करना ?

आशिषों की प्रतिज्ञा (जक.८:१-२३)

* भविष्य के बारे में १० प्रोत्साहन भरी बातें दी गई हैं। हर एक इस घोषणा के साथ प्रारंभ होता है, " सेनाओं का प्रभु यों कहता है"।
* वह दोनों ही युगों की आशिषों की बात करता है अर्थात् तुरन्त आनेवाले युग और मसीही युग।
* हम देखते हैं कि प्रतिज्ञाबद्ध आशिषों के लिये भी शर्तें थी (व. १६-१७)। परमेश्वर उनसे धार्मिक होने की अपेक्षा रखते थे।

* हम देखते हैं कि उपवास की बजाए आनन्ददायी और खुशी के मौकों से परमेश्वर अधिक खुश होते थे (व.१८-१९)। परमेश्वर हमें मौज में और आनन्दित देखना चाहते हैं।
* वचन २३ में हम एक धार्मिक जीवन की शान्ती को देखते है।

हम पृथ्वी के नमक हैं। परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा ? वह फिर किसी काम का नहीं होता। लोग उसको बाहर फेंक देते हैं, और मनुष्य के पैरों तले रौंदा जाता है। हम जगत की ज्योती हैं। तब जो नगर पहाड़ पर बसा है, वह छिप नहीं सकता। लोग दिया जलाकर पैमाने के निचे नही परन्तु दीपस्तम्भ पर रखते हैं। तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुँचता है। इसी प्रकार हमारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके कि वे हमारे भले कामों को देखकर हमारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें।

उपयोग : आपके जीवन के किन क्षेत्रों में लोगों को मसीह दिखाई देता है?

''सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो, ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बिच परमेश्वर की निष्कलंक संतान बने रहो(जिनके बिच में तुम जीवन का वचन लिये हुए संसार में जलते दिपकों के समान दीखाई देते हो)। तुम मसीह के दिन मुझे घमण्ड करने का करण हो। मैं उस दिन कह सकूँगा कि न मेरा दौड़ना और मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ (फिलि. २:१४-१६)।''

******

जकर्याह की किताब (जक. ९-१०) दिन-२७

इस्राएल के दुश्मनों का न्याय (जक.९:१-८)

* आस पास के राष्ट्रों से परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा।
* हम यहाँ फिर से देखते हैं कि कैसे सभी राष्ट्रों पर परमेश्वर का नियंत्रण है।

परमेश्वर के जाने बिना और उसकी अनुमती के बिना कुछ नहीं होता। मसीही होने के नाते हमें सुरक्षा की प्रतिज्ञा दी गई है। परमेश्वर हमें सुरक्षित रखते हैं और दुष्ट हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते (१ यूहन्ना ५:१८)

सिय्योन के राजा का आना (जक. ९:९-१३)

* यह अनुच्छेद स्पष्ट रुप से मसीह के आने की भविष्यवाणी करता है।(मत्ती २१:१-११ और यूहन्ना १२:१३-१९)। यह मसीह के विजयी आगमन का वर्णन करते हैं।
* मसीह शान्ती लाएगा और कैदीयों को सूखे गड्ढों से छुड़ाएगा।
* मसीह 'गधे पर सवार' होकर आता है। वह सेवा लेने नहीं परन्तु सेवा करने और बहूत लोगों को अपने प्राण देखर छुड़ाने के लिये आया है। हमारे उद्धारकर्ता और हमारे राजा के लिये परमेश्वर की महीमा हो जो कोमल है और गधे पर सवार होकर हमारे पास आता है।

कल्पना करो कि यह भविष्यवाणी आपने उस समय में सुनी होती तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होती?

प्रभु प्रकट होता और सम्भालता है (जक.९:१४-१०:१२)

* पहला भाग यहूदा के पुनर्वसन की बात करता है। (व १३-१७)। शायद यूहदियों की उनके दुश्मनों पर विजय के बारे में।

अध्याय १० कुछ मसीही भविष्यवाणियों की बात करता है।

* मूर्तिपूजा और झूठे अगुओं के कारण वे बंधुत्व में गए। परन्तु यहूदा का गोत्र उनके छुड़ाने में कोने के पत्थर का काम करेगा। कोने का पत्थर मसीह है। (यशायाह २३:१६, १पतरस २:६, इफि, २:२०)।
* यहूदा को पहले गोत्र के रुप में चुना गया था जिससे मसीह आने वाला था।
* परमेश्वर उनके नगरों के पुनर्वसन की प्रतिज्ञा करते हैं। (व. ६-१२) यह अनुच्छेद यह भी दिखाता है कि, कैसे प्रभु अपने भेड़ों की चरवाही करेगा।

उपयोग: भजन संहिता २३ द्वारा परमेश्वर की स्तुती करो।

''मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। जो मनुष्य अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की फसल काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है; वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की फसल काटेगा। हम भले काम करने में साहस न छोड़ें। क्योंकि यदि हम भले काम करना न छोडेंगे तो सही समय पर फसल भी काटेंगे। इसलिये जहाँ तक अवसर मिले, हम सब के साथ भलाई करें, विशेष कर विश्वासी भाईयों के साथ।'' (गलतियों ६:७-१०)

जकर्याह की किताब (जक.११-१२) दिन-२८

दो चरवाहे (जक.११:१-१७)

- यह भाग आशिष की प्रतिज्ञा को अस्विकारने के बारे में बताता है।
- इस अस्विकृति के फलस्वरुप इस्राएल को निर्णायक हार प्राप्त हुई, जिसके कारण जैसा नियम में परिभाषित था, यहूदी धर्म का अन्त हुआ। और सन ७० ए. डी. में रोमियों ने उन्हें पूर्णतः उखाड़ कर फेंक डाला।
- परमेश्वर ने उन्हें अपनी भेड़ों की नाई हरी चराईयों में चराया और उनके बुरे चारवाहों से नीपटा, लेकिन जब फिर एक बार उन्हों ने उसको अस्विकारा तो अन्ततः उसने उनसे बान्धी अपनी वाचा को तोड़ दिया। यह उसके तोड़े गए लाठीयों द्वारा सूचित होता है। (व ७-११)।
- भविष्यद्वक्ता ने लोगों से कहा कि उनकी समझ से वे उसके काम की जो भी किमत लगाएँ उतना अदा करें।
- उनकी प्रतिक्रिया दयनीय थी क्योंकि उन्हों ने चान्दी के ३० टुकड़े देना उचित समझा। उनकी प्रतिक्रिया से परमेश्वर को घृणा हुई। यीशु के बारे में यह अनुछेद मत्ती २७:९ में लिखा गया है।

यहाँ यीशु हमारा अच्छा चरवाहा है। वह अपने भेड़ों को उनके नाम से जानता और उन्हें उनके नाम लेकर बुलाता और उनकी अगुवाई करता है। क्या हम उसकी अच्छी भेड़ें हैं? जो उसकी सुनते, उनपर चलते और अच्छे चरवाहे को जानते हैं?

यरूशेलम के दुश्मन नाश किये जाएँगे (जक. १२:१-९)

- यह भाग, वास्तविक यरुशेलम के विनाश की भविष्यवाणि के बाद आता है। वास्तवमें यह बताता है कि मसीह कि कलीसिया कैसे अविनाशी है।
- परमेश्वर के राज्य में उसके लोगों की शक्ति पर ध्यान दो। सबसे कमज़ोर दाऊद की तरह मजबूत बनेंगे।
- लोग मजबूत होंगे क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु उनका परमेश्वर होगा।(व.५)
- परमेश्वर की आत्मा की स्तुती करो जो हम में वास करता और हमें मजबूत और विजयी बनने में मदद करता है।

जिसको उन्होंने घायल किया उसीके लिये विलाप (जक.१२:१०-१४)

- वह यीशु है जिसे उन्हों ने घायल किया।
- उसके घायल होने से हम हमारे पापों से शुद्ध किये गए (यूहन्ना १९:३७, १पतरस २:२१-२४)।

निश्चय उसने हमारे रागों को सह लिया और हमारे हि दुःखों को उठा लिया; तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कुटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उसपर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ। हम तो सबके सब भेड़ों की नाई भटक गए थे। हममें से हर एकने अपना-अपना मार्ग लिया और प्रभु ने हम सभी के अधर्मो का बोझ उसी पर लाद दिया।

उपयोग : सोचिये कि आप कैसे एक अच्छी भेड़ बन सकते हैं।

"मेरी भेड़ मेरी आवाज सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ। वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट नही होंगी। और कोई उन्हें मेरे हाथ से नही छीन सकेगा। मेरा पिता जिसने उन्हें मुझको दिया है, सबसे बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नही सकता।(यूहन्ना १०:२७-२९)"

******

जकर्याह की किताब (जक. १३-१४) दिन-२९

पापों से शुद्धिकरण (जक. १३:१-९)

- हमारे पापों की क्षमा के लिये परीपूर्ण अनुग्रह को उस दिन बहते हुए सोते के समान बताया गया है (व.१)
- परमेश्वर के लोगों के बीच से मूर्तिपूजा को हमेशा के लिये निकाल दिया जाएगा (व.२)
- एक बार जब मसीह की नई वाचा पूरी तरह से लोगों पर प्रकट की और लिखी जाएगी, उस दिन भविष्यद्वक्ताओं के दफ्तर बन्द हो जाएँगे (व. २-६)।
- चरवाहे का मारा-कूटा जाना (व.७-९) फिरसे मसीह की ओर ईशारा करता है। (मत्ती २६:३१)

* मारा-कूटा जानेवाला व्यक्ति यद्यपी परमेश्वर के बहुत करिब था (व.७), फिर भी स्वयं परमेश्वर ने ही उसे मारने की आज्ञा दी। (प्रेरित २:२३)
* सिर्फ बचे हुए लोगों ने ही अपने लिये इस प्रस्ताव को अपनाया(व.८)। और उन्हें परमेश्वर के द्वारा शुद्ध करनेवाली आग में डाला जाने वाला था (व.९)।

परमेश्वर का अनुग्रह हमारे लिये भी खोला गया है। सोता यीशु का लहू है जो हमें इस गीत के समान हर अशुद्धता से शुद्ध करेगा। ''बेईमान, मैं पर्वतों पर उड़ूँ, उद्धारकर्ता मुझे धो नही तो मैं मरुँ। सदियों के चट्टान, मेरे लिये फाड़, मुझे तुझमें छुपने दे।''

प्रभु आते और राज्य करते हैं (जक.१४:१-२१)

* पहला भाग वास्तविक यरूशेलम का विनाश दिखाता है।
* परमेश्वर विनाशकों के नाश की प्रतिज्ञा देते हैं (व ३.९-७)।
* इसका आरंभ इस अध्याय के व. ८ से शुरु होता है, जहाँ मसीह के राज्यमें धार्मिक आशिषों की याद दिलाई गई है।
* यरुशलेम से जीवन का सोता बहता है-अर्थात् पवित्र आत्मा (व.८, यूहन्ना ७:३७-३९)।
* राजा एक प्रभु होगा (व. ९, इफि. ४:५)।
* अन्यजाती के लोग जिन्होंने परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध लड़ाई की थी उनके पास एक मौका होगा परमेश्वर के लोगों के साथ जुड़ने का (व.१६-१९) अन्ततः भविष्यद्वक्ता एक ऐसा दिन देखता है जब हर वस्तु और जीवन के हर पहलु पर यीशु मसीह की प्रभुता होगी (व.२०-२१)।
* पुराना चला गया, नया आया है।

हम भी आतुरता से नए का इन्तज़ार करते हैं। जैसा लिखा है, ''देख परमेश्वर का निवास मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ निवास करेगा, और वे उसके निज लोग होंगे, और परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा। वह उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पौंछ डालेगा। इसके बाद न मृत्यु रहेगी, न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी। पहली बातें समाप्त हो गईं। जो सिंहासन पर बैठा था उसने कहा ''देख मैं अब सबकुछ नया कर रहा हूँ''।

उपयोग : स्वर्ग के बारे में सोचकर हमें मार्ग दिखाने के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

''जो आँख ने नहीं देखा और कान ने नही सुना और जो बातें मनुष्य की चिन्त में नही चढ़ीं, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम करनेवालों के लिये तैयार की हैं। परमेश्वरने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया। आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है। कौन मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य की बातें जानता है ? केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है। वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नही जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा (१कुरः २:९-११)''

******

मलाकी की किताब (मलाकी १-२:९)दिन-३०

परिचय

मलाकी का अर्थ है, ''मेरा सन्देशवाहक''। इस किताब की ऐतिहासिक बातें नेहम्याह के समय से मेल खाती हैं। इसलिये हम अनुमान लगाते हैं कि, यह सन ४४५-४३२ ई. पू. की बात है। मन्दिर के पुनर्निर्माण के कई वर्षों बाद नेहम्याह इस्राएलियों के एक गुट को वापस कनान ले गया था। यह उसने यरुशेलम की दिवार फिरसे बनाने के लिये किया था।

मलाकी का लेखन यह बताता है कि लोग बहुत चिड़चिड़े हो गए थे क्योंकि अब तक उनके'सुवर्ण युग' का सवेरा नहीं हुआ था। इस चिड़चिड़ेपन का असर परमेश्वर के प्रति उनके जोश पर पड़ा। मलाकी ने तुरुन्त लोगों को फिर से परमेश्वर के प्रति वचनबद्ध रहने की बात कही। वह इस बात को पूरी तरह से स्पष्ट करता है कि आलसपन जा चुका है, और तत्पर संकल्प जाग उठा है। मलाकी की भविष्यवाणियाँ विवादास्पद रूप में हैं। दूसरे शब्दो में, परमेश्वर अपना मुद्दा बताते; लोग प्रश्नों के द्वारा उत्तर देते और परमेश्वर फिर से उन प्रश्नों का उत्तर देते।

पहला विवाद (मलाकी १:२-५)

* परमेश्वर कहता है: मैंने तुमसे प्रेम किया है।
* लोग पूछते : आपने हमसे कैसे प्रेम किया ?
* परमेश्वर उत्तर देते हैं : एसाव (एदोम) के बजाए याकूब (इस्राएल) को चुनकर।

परमेश्वर उसके लोगों को याद दिलाता है कि उसने याकूब से प्रेम किया

परन्तु एसाव से घृणा । इसे संपूर्ण रुप से नहीं लेकिन वस्तुस्थिती के रुप में देखना है, याने कि, परमेश्वर ने याकूब को चाहा या चुना। याकूब और एसाव इनको एक व्यक्ति न समझकर एक राष्ट्र के रुपमें समझना चाहिये। याने कि परमेश्वर के प्रेम को प्राथमिक चुनाव और वाचा से मतलब था। उनके साथ उसकी इस वाचा के कारण वे उसके प्रेम के पात्र थे।

दूसरा विवाद (मलाकी १:६-२:९)

- परमेश्वर ने कहा : तुम याजक मेरे नाम का अनादर क्यों करते हो ?
- याजक पूछते हैं : हमने आपके नाम का अनादर कैसे किया ?
- परमेश्वर उत्तर देते हैं : अशुद्ध भेंट चढ़ाकर ।
- याजक पूछते हैं : ऐसा हमने क्या किया ?
- परमेश्वर उत्तर देते : अशुद्ध, लंगड़े और रोगी पशु की भेंट चढ़ाकर ।

इस प्रकार की भेंट वे अपने राज्यपाल को कभी न देते, परन्तु बचा-कुचा परमेश्वर को देते समय उन्होने कुछ विचार नहीं किया। परमेश्वर यह भी कहते हैं कि, पापपूर्ण उपासना से तो उपासना न करना बहेतर है। आज हम कैसे बलिदान करते हैं? हमारा शरीर (रोमियों १२:१), हमारा पैसा (फिलि. ४:१८), परमेश्वर के प्रति हमारी स्तुति (इब्री. १३:१५), दूसरों की सेवा (इब्री. १३:१६), हमारी प्रार्थना (प्र. वा. ५:८) और हमारे फल (रोमियों १५:१६)। बलिदान के लिये हमारा स्वभाव कैसा है ?

उपयोगः परमेश्वर के लिये आज तुम क्या बलिदान कर रहे हो?

''मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण कर यह अनुरोध करता हूँ, अपने शरीर को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को पसंद आनेवाली भेंट जैसा चढ़ाओ । यह तुम्हारी आत्मिक सेवा है ।(रोमियो १२:१)''

******

मलाकी की किताब (मलाकी २:१०-४) दिन-३१

तीसरा विवाद (मलाकी २:१०-१६)

- परमेश्वर कहता है : वह उनकी भेंट स्वीकार नहीं करेंगे ।
- लोग पूछते हैं : क्यो ?
- परमेश्वर उत्तर देते हैं : क्योंकि उन्होने अपने जवानी की ब्याही हुई स्त्रीसे की हुई वाचा का विश्वासघात किया था ।

विश्वासघात करना हमेशा ही बुरा है । परन्तु इस्राएलियों ने अपनी विवाह की वाचाओं को बड़ी ही घृणीत रुप से तोड़ा था । उन्होंने विदेशी स्त्रीओं से ब्याह किया जो मूर्तिपूजक थे और अपनी पत्नीओं को तलाक दिया । परमेश्वर कहते हैं, ''मैं स्त्री त्याग (तलाक) से घृणा करता हुँ ।''

चौथा विवाद (मलाकी २:१७-३:५)

- परमेश्वर कहते हैं : तुमने मुझे उकता दिया है ।
- लोग पूछते हैं : कैसे ?
- परमेश्वर उत्तर देते हैं : यह सोचकर कि बुराई करनेवाला फलता फूलता है ।

परमेश्वर उसके लोगों को उसके आने के दिन की याद दिलाता है । परमेश्वर उसके दिन पर आएगा, सभी गलत को सही करने, दुष्ट को सजा और धार्मिक को प्रतिफल देने । ''धार्मिक'' और ''दुष्ट'' के बीच में बड़ा फर्क होगा और उनके बीच भी जो सेवा करेंगे और जो सेवा नहीं करेंगे बड़ा फर्क होगा।

पाँचवाँ विवाद (मलाकी ३:६-१२)

- परमेश्वर कहते हैं : मेरी ओर लौटो ।
- लोग पूछते हैं : कैसे ?
- परमेश्वर कहते हैं : तुम मुझसे चोरी कर रहे हो ।
- लोग पूछते हैं : कैसे ?
- परमेश्वर उत्तर देते हैं : दशमांश और भेंट न देकर ।

परमेश्वर उनके स्वभाव की बात कर रहा था । उनका धर्म था, त्याग-आनंद नहीं, बोझ- आशिष नहीं, बलिदान-उद्धार नहीं , अज्ञान-प्रकाश नहीं ।

छठवाँ विवाद (मलाकी ३:१३-४:६)

- परमेश्वर कहते हैं: तुमने मेरे विरुद्ध बोला है ।
- लोग पूछते हैं : कैसे ?
- परमेश्वर उत्तर देते हैं : यह कह कर कि परमेश्वर की सेवा करना व्यर्थ है ।

वह दुष्ट को सज़ा और विश्वासी को प्रतिफल देगा । परमेश्वर उन्हें मुसा के नियमों का पालन करने को कहता है (मलाकी ४:४) और यह भी कहता है कि, प्रभु के दिन से पहले एलियाह आएगा (४:५-६) ।

उपयोग : क्या आपको आपका मसीही जीवन बोज़ लगता है ? यदि हाँ, तो क्यों ?

"परमेश्वर का प्रेम यह है कि, हम उसकी आज्ञाओं को माने । उसकी आज्ञाएँ कठिन नहीं हैं । जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर विजय प्राप्त करता है । वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है और हमारे विश्वास पर भी ।(१यूहन्ना ५:३-४)"

* * * * * *

मसीही भविष्यवाणियों की पूर्ति (छोटे भविष्यद्वक्ता)

किताब	वचन	भविष्यवाणि	नया नियम में पूर्ति
होशे	११:१	परमेश्वर अपने पुत्र (मसीह) को मिस्र से बुलाएगा	मत्ती २:१३-१५
	१३:१५	मसीह पाप और मृत्यु पर विजय पाएगा	१कुरू. १५:५५-५७
योएल	२:३२	सभी मनुष्य जाति का मसीह उद्धार करेगा	रोमियों १०:१२-१३
आमोस	८:९	यीशु के क्रूस पर जाते समय परमेश्वर अन्धियारा कर देंगे	मत्ती २७:४५-४६
मीका	५:१	परिक्षा के समय मसीह के मुँह पर मारा जएगा	मत्ती २७:३०
	५:२	मसीह का जन्म बेथलेहेम गाँव में होगा	मत्ती २:१-२
	५:२	मसीह यहूदा के वंश से होगा	लूका ३:२३-३३
	५:२	मसीहा अमर होगा	प्र. वा. १:८
हग्गै	२:६-९	मसीह द्वितीय मन्दिर को भेंट देगा	लूका २:२७-३२
	२:२३	मसीह येरुब्बाबेल के वंश से होगा	लूका ३:२३-२७
जकर्याह	२:१०-११	मसीह परमेश्वर होगा और अपने लोगों में रहेगा	यूहन्ना १:१४
	२:१०-११	मसीह को परमेश्वर भेजेंगे	यूहन्ना ८:१८-१९
	३:८	मसीह येरुब्बाबेल के वंश से होगा	लूका ३:२३-२७
	३:८	मसीह परमेश्वर का चुना हुआ सन्देश वाहक होगा	यूहन्ना १७:४
	६:१२-१३	मसीह महायाजक और राजा दोनो ही होगा	इब्री. ८:१/ रोमियों ८:३४
	९:९	मसीह यरुशलेम में प्रवेश करेगा और उस का आनंदमय स्वागत होगा।	मत्ती २१:८-१०
	९:९	मसीह को राजा के रूप में देखा जाएगा	यूहन्ना १२:१२-१३
	९:९	मसीह न्यायी और विश्वास योग्य होगा	यूहन्ना ५:३०
	९:९	मसीह समस्त मानव जाती के लिये उद्धार लाएगा	लूका १९:१०/ तीतुस् २:११
	९:९	मसीह दीन आत्मा से परिपूर्ण होगा	मत्ती ११:२९/ यूहन्ना १३:४-१४
	९:९	मसीह गधेपर बैठकर यरुशलेम में प्रवेश करेगा	मत्ती २१:६-९
	१०:४	मसीह कोने का पत्थर होगा	इफी. २:२०
	११:१०	ईस्राएल का मसीह को अस्विकार करने का नतीजा होगा लोगों (यहूदियों) से परमेश्वर अपनी सुरक्षा हटा लेंगे	लूका १९:४१-४४

किताब	वचन	भविष्यवाणि	नया नियम में पूर्ति
	११:१२	चाँदी के तीस सिक्कों के लिये यहूदा मसीह को धोखा देगा	मत्ती २६:१४-१५
	११:१३	चाँदी के तीस सिक्के मन्दिर में फेंके जाएँगे	मत्ती २७:३-५
	११:१३	चाँदी के तीस सिक्कों से कुंम्भार की खेती खरीदी जाएगी	मत्ती २७:६-७
	१२:१०	मसीह का शरीर छेदा जाएगा (लहू/पानी बहा)	यूहन्ना १९:३४
	१३:७	मसीह परमेश्वर के बराबर होगा	यूहन्ना १४:९
	१३:७	मसीह की मृत्यु के बाद शिष्य तीतर बितर होंगे	मत्ती २६:३१-५६
मलाकी	३:१	एक सन्देश वाहक (यूहन्ना बप्तीस्मादाता) मसीह के लिये मार्ग तैयार करेगा	मत्ती ११:१०
	३:१	यहूदियों के मन्दिर में मसीह एक अनकहा प्रवेश करेगा	मत्ती ११:१५-१६
	३:१	मसीह "नयी वाचा" की बात कहेगा	लूका ४:४३
	४:५	मसीह के आने की घोषणा करनेवाला व्यक्ति एलियाह की आत्मा में आएगा (यूहन्ना बप्तीस्मादाता)	मत्ती ३:१-२/ मत्ती ११:१३-१४
	४:६	मसीह का प्रवक्ता कई दिलों को परमेश्वर की ओर मोड़ेगा	लूका १:१६-१७/ मरकूस १:३-५